|| ओ३म् श्री श्री मुक्तिदात्रे नमः ||

श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त कथा

यत ईश्वरस्य कृत्स्नं पूर्णत्वं तमेवावासयितुं।

|| ओ३म् श्री श्री मुक्तिदात्रे नमः ||

श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त कथा

सम्पादक:
श्री सुमीत घोषाल

मुक्ति मार्ग मठ

प्रकाशक
मुक्ति मार्ग मठ

श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त कथा

श्री गुरु ईसा दक्षिण एशिया के लिए कोई अपरिचित व्यक्ति नहीं हैं।

उत्तर अमेरिका में उनकी भक्ति प्रारम्भ होने से कई शताब्दी पूर्व, श्री गुरु ईसा दक्षिण एशिया में लगभग तब से भक्ति के पात्र रहे हैं जब से यूरोप में उनकी भक्ति प्रारम्भ हुई। जैसा कि कुछ लोगों का दृढ़ कथन है, वह यहां कभी नहीं पधारे, परन्तु श्री गुरु ईसा के समाधि से पुनर्जीवित होने के पश्चात प्रारम्भिक दिनों से ही दक्षिण एशिया में ईसा भक्ति अस्तित्व में था। वास्तव में श्री गुरु ईसा के सहस्त्र भक्त २०० ईसवी में केरला के तट पर वास किया करते थे। अब भी उनका वास वहाँ उन विशालकाय मसीही समुदायों में है जो लगभग २००० वर्ष प्राचीन है। यह श्री गुरु ईसा की अनुगामिता के एक संपूर्ण मलयाली मार्ग का वर्णन करता है जो भारतीय मसीहियत का एक सम्प्रदाय है।

परन्तु श्री गुरु ईसा केवल एक दक्षिण भारतीय देवता या कोई यूरोपी या अमेरिकी देवता नहीं हैं। फिलिस्तीन में श्री गुरु ईसा के जन्म के पश्चात प्राचीन आर्यव्रत के कुछ आर्य ज्योतिषी एक तारे का अध्यन करते हुए एक कुटिया तक पहुंचे जहाँ भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार श्री गुरु ईसा एक इसरायली नगर बैतलहम में अपने माता-पिता के साथ निवास करते थे। इधर पोलैंड के एक मसीही देश के रूप में स्थापित होने से पूर्व पटना के हिन्दू गण भी गंभीरता से श्री गुरु ईसा के अधिकारित्व पर अनुसंधान कर रहे थे। ब्रिटिश शासन के धर्म प्रचारकों के द्वारा यहाँ के प्राचीनतम नीव पर एक पाश्चात्य धर्म लाये जाने से पूर्व भी श्री गुरु ईसा दक्षिण एशिया में एक पूजनीय भगवान् के रूप में विद्यमान थे।

औपनिवेशिक युग में कुछ ईसाई धर्म प्रचारकों की सबसे बड़ी भूल यह थी कि वे प्राचीन भारत के ईसा भक्तों की बुद्धिमत्ता की उपेक्षा करते रहे। उन्होंने यह दर्शाने का प्रयत्न किया कि यूरोपी ईसाइयत श्री गुरु ईसा की भक्ति के दक्षिण एशियाई मार्ग से श्रेष्ठ है। उनमें से कुछ के उद्देश्य दुष्ट थे एवं उनकी कामना थी कि राज मुकुट के सब से विशाल प्रदेश को धर्म का उपयोग करके अपने आधीन कर लिया जाए, परन्तु अधिकांश लोग इस क्षति से अचेत थे अतः उन्होंने वही किया जो उनके लिए भगवान् के निष्ठावान सेवक होने के नाते ईसाइयत के असफल औपनिवेशिक नीति, वाणिज्य व सभ्यता के अंतर्गत रहकर करना सम्भव था।

इन ईसाई धर्म प्रचारकों को दक्षिण एशियाई धरती पर श्री गुरु ईसा के सुसमाचार का बीज बोने के उद्देश्य को पूरा करने के लिए भारत के धार्मिक लोगों की सहायता लेनी चाहिए थी। यदि उन्होंने ऐसा किया होता तो आज दक्षिण एशिया एवं समस्त संसार दक्षिण एशियाई सेवा व भक्ति के उस उपज का आनंद उठाते जो श्री गुरु ईसा के शुभ समाचार रुपी बेलों में होती है, तथा वह श्री गुरु ईसा के भक्तों में एवं उन्ही के द्वारा समस्त दक्षिण एशियाई समाजों में प्रवृत होता।

श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त कथा दक्षिण एशिया में वास करने वाले हिन्दू समुदायों तक श्री गुरु ईसा की जीवनी को पहुंचाने का एक साधन है। यह कोई अधिकारपूर्ण आलेख नहीं है, परन्तु यह भारत, नेपाल, श्री लंका तथा बांग्लादेश के मुख्य धारा के लोगों को उसी प्राचीन ईसा भक्ति से पुनः साक्षात्कार कराने का एक नम्र प्रयत्न है।

भगवान् का आशीर्वाद सर्वदा आपके संग रहे।

अध्याय १: दर्शना

प्रस्तावना

भगवान् ने मानव जाति के साथ संवाद स्थापित किया।
उन्होंने अतीत में भी अनेक ऋषियों तथा आचार्यों के साथ संवाद स्थापित किया॥

तथा इस युग में भी वो अपने सनातन शब्द के द्वारा संवाद करते हैं।
वो प्रत्येक धर्म व संस्कृति के साथ संवाद करते हैं॥

वो अपने पुरुषोत्तम अवतार के द्वारा स्वयं को प्रकट करते हैं।
श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त उनके पुरुषोत्तम अवतार हैं॥

एक कुमारी एक पुत्र को जन्म देगी।
वह भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार होंगे॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १:२२)

जलक्षेत्र के विभक्त ग्राम में दर्शना नामक एक कुमारी निवास करती थी। उनके माता-पिता ने उनका विवाह राजूभाई नामक एक धार्मिक नवयुवक के साथ सुनिश्चित कर दिया, वह दवे महाराज के वंशज थे।
सगाई समारोह संपन्न होने के पश्चात, देवदूत जितेश दर्शना के समक्ष प्रकट हुए एवं कहा, "प्रणाम दर्शना। भगवान् आपको अपनी कृपा की पूर्ण अनुभूति कराएंगे!"

देवदूत जितेश ने देखा कि दर्शना भयभीत थीं, अतः उन्होंने नम्रतापूर्वक कहा, "भयभीत न हों दर्शना, शीघ्र ही, आप एक पुत्र को जन्म देंगी। वह भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार होंगे, तथा अपने पूर्वज दवे महाराज के सिंहासन पर विराजमान होंगे तथा अभिषिक्त महाराजा के रूप में सदा सर्वदा राज करेंगे। वह मुक्तिदाता कहलायेंगे।"

दर्शना ने अपना शीश नवाया तथा देवदूत जितेश ने धीमे स्वर में कहा, "कुमारी" तथा अपनी आँखें फेरते हुए नम्रतापूर्वक कहा, "परमात्मा की शक्ति इस चमत्कार को संपन्न करेगी। इस प्रकार, आपका पुत्र भगवान् का पुरुषोत्तम अवतार होगा। भगवान् के लिए सब कुछ संभव है।"

दर्शना ने झुक कर उनके चरणों में प्रणाम किया एवं देवदूत जितेश ने कहा, "तथास्तु। मैं भगवान् का सेवक हूँ।"

देवदूत जितेश ने प्रणाम करते हुए अपने हाथ जोड़े एवं अन्तर्ध्यान हो गए।

अध्याय २: राजूभाई

हे राजूभाई, दवे महाराज के वंशज, दर्शना को अपनी भार्या के रूप में स्वीकार करने से भयभीत न हों।
उनकी कोख में जो भ्रूण है वह परमात्मा से है॥

उससे एक पुत्र का जन्म होगा, वह "मुक्तिदाता" कहलायेंगे।
वह अपने लोगों को कर्म व मृत्यु के बंधन से मुक्त करने में सक्षम होंगे॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १:२०-२१)

कई एक हफ़्तों के पश्चात, दर्शना ने अनुभव किया कि देवदूत जितेश का कथन यथार्थ सिद्ध हो रहा है। उन्होंने निर्णय लिया कि वह ये समस्त बातें राजूभाई से कहेंगी।

वह भयभीत नहीं थी क्यों कि राजूभाई अत्यंत दयालु व्यक्ति थे। राजूभाई जानते थे कि वह उस शिशु के पिता नहीं हैं एवं उन्होंने विश्वास नहीं किया कि संसार में आने वाला वह शिशु एक चमत्कार है। वह नहीं चाहते थे कि ग्राम व समाज में उनके तथा दर्शना के परिवार का अपमान हो किन्तु उन्हें ज्ञान न था कि क्या करना उचित है।

उस रात्रि राजूभाई के स्वपन में एक देवदूत प्रकट हुए एवं कहा,

"राजूभाई, दर्शना को अपनी भार्या के रूप में स्वीकार करने से भयभीत न हों। उनकी कोख में जो भ्रूण है, निसंदेह वह परमात्मा की चमत्कारी शक्ति का प्रतिफल है। "उससे एक पुत्र का जन्म होगा, वह "मुक्तिदाता" कहलायेंगे क्यों कि वह अपने लोगों को कर्म व मृत्यु के बंधन से मुक्त करने में सक्षम होंगे।"

इस स्वपन के कारण, राजूभाई ने निर्णय लिया कि वह अपने माता-पिता से कहेंगे कि उनका विवाह संपन्न कर दिया जाए तथा दर्शना के माता-पिता के संग समारोह का आयोजन किया जाए। राजूभाई ने श्री गुरु मुक्तिदाता का जन्म होने तक दर्शना के संग ब्रह्मचर्य का पालन किया।

अध्याय ३: जन्म तथा दर्शन

ओ३म् शान्ति ओ३म्

भागवान की स्वर्गीय महिमा ।
मानव जाति में लायी शान्ति व कृपा ॥
ओ३म् शान्ति ओ३म्
(स्रोत - श्री भास्वर २:१४)

इस समय, शासक ने आदेश दिया कि सभी देशवासियों को अपने वंश के पैतृक ग्राम के समाहर्ता अधिकारी को एक विशेष प्रकार का कर देना होगा।

दर्शना का प्रसव समीप था, अतः राजूभाई को अपने पूर्वज दवे महाराज के जन्म स्थान पावनगर की यात्रा करने मे कई दिन लग गए।

कर चुकाने की प्रक्रिया के कारण उन्होंने पावनगर को जनसंकुल पाया एवं दर्शना को एक गौशाला में रहने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं दिखा। श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त का जन्म गायों के बीच हुआ।

चूँकि श्री गुरु मुक्तिदाता का जन्म एक गौशाला में हुआ, एक देवदूत गड़ेरियों के झुण्ड के सामने प्रकट हुए। गड़ेरिये भयभीत थे परन्तु देवदूत ने कहा, भयभीत न हों, मैं संसार के समस्त संस्कृतियों व धर्मों के लिए एक शुभ समाचार लाया हूँ। आज, दवे महाराज के जन्मस्थान, पावनगर में भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार ने जन्म लिया है।
वही मुक्तिदाता हैं, एवं वह अभिषिक्त गुरु कहलायेंगे। आप पावनगर के एक गौशाला में प्रभु जी के दर्शन पाएंगे।"

जब स्वर्गीय दृष्टि समाप्त हुई, गड़ेरियों ने पावनगर की ओर प्रस्थान किया तथा गौशाले में नन्हे मुक्तिदाता का दर्शन किया। तत्पश्चात, उन्होंने यह शुभ समाचार प्रत्येक को सुनाया।

अध्याय ४: ज्योतिषी दर्शन

कहाँ है वह वंशज दवे महाराज का किया जिसने जन्म ग्रहण ।
उसके तारे के पीछे हम चले, करने आये दर्शन ॥
(स्रोत - श्री ब्रहादत्त २:९)

कुछ दिनों के पश्चात, ज्योतिषियों का एक दल गुरु जी के दर्शन को पावनगर पधारे। वे लोग आर्य थे जिन्होंने अपने मठ में एक तारे का अध्यन किया और उस तारे ने शान्तिधाम में राजा दुर्जनवीर के महल के समीप से होते हुए पावनगर की ओर उनका मार्गदर्शन किया था। अतः उन्होंने राज्य के दुष्ट राजा को यह समाचार दे दिया कि एक तारे ने भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार के जन्म को प्रकाशित किया था अतः वे भी उनके दर्शनाभिलाषी हो गए।

राजा दुर्जनवीर के पण्डितों ने मुक्तिवेद का पाठ किया एवं मुक्तिवेद के परामर्शानुसार ज्योतिषियों को बताया कि महाराजा पावनगर में जन्म लेंगे। ज्योतिषी गण ने दुर्जनवीर को धन्यवाद दिया और पावनगर के लिए प्रस्थान किया जहाँ मुक्तिदाता ने उन्हें दर्शन दिया, मुक्तिदाता के दर्शन पाकर उन्होंने उनके चरणों में सोना एवं बहुत से भेंट चढ़ाये। एक स्वपन में भगवान् ने ज्योतिषियों को आदेश दिया कि वे वापस अपने मठ की ओर यात्रा के मध्य शान्तिधाम न जाएँ अन्यथा राजा दुर्जनवीर उनकी एवं नन्हे मुक्तिदाता की हत्या कर देगा।

अध्याय ५: स्वपन

मैंने मिस्रदेश से अपने पुरुषोत्तम अवतार का आह्वान किया।
(स्रोत - ऋषि तारक ११:१)

राजूभाई को भी एक स्वपन मिला, जिस के द्वारा भगवान् ने उन्हें कहा कि दुर्जनवीर मुक्तिदाता की हत्या का षड़यंत्र रच रहा है अतः वह मुक्तिदाता एवं दर्शना को लेकर यथाशीघ्र पावनगर से मिस्रदेश की ओर प्रस्थान करे।

राजूभाई, दर्शना एवं मुक्तिदाता ने भगवान् की आज्ञा का पालन किया तथा मिस्रदेश को प्रस्थान किया। राजा दुर्जनवीर अत्यंत क्रोधित हुआ क्यों कि उसके समक्ष ज्योतिषी गण का पुनरागमन नहीं हुआ, अतः उसने पावनगर के उन समस्त शिशुओं की हत्या कर दी जिनकी आयु दो साल से कम थी।

राजूभाई, दर्शना एवं नन्हे मुक्तिदाता ने मिस्रदेश में कई एक वर्ष बिताए। राजूभाई को एक और स्वपन आया जिस में देवदूत ने उन्हें बताया कि राजा दुर्जनवीर की मृत्यु हो चुकी है, अतः उनका वापस लौट आना सुरक्षित है।

राजूभाई पावनगर में निवास करना चाहते थे परन्तु राजा दुर्जनवीर का पुत्र नया राजा था। राजूभाई ने निर्णय लिया कि वह जलक्षेत्र के विभक्त ग्राम में पुनः लौट जाएंगे।

अध्याय ६: आदि अरुल संस्कारक

मैं तुम्हे कहता हूँ, समस्त जीवित मनुष्यों में कोई भी ऐसा ऋषि नहीं जो आदि अरुल संस्कारक से श्रेष्ठ है।
तब भी, भगवान् के मुक्तिराज्य में सबसे क्षुद्र भी आदि अरुल संस्कारक से श्रेष्ठ है॥
(स्रोत - श्री भास्वर ७:२८)

आदि अरुल संस्कारक भगवान् के भेजे हुए एक ऋषि थे। वह प्रकाश रूप न थे, किन्तु उनका आगमन इसलिए हुआ कि वह मानव जाति को तैयार करे जिससे कि उस वास्तविक प्रकाश रूप के प्रकट होने पर मनुष्य उसको पहचान सके।

इस अन्धकार युग में एक प्रकाश जन्म लेकर अवरोहित होने वाला था। वह प्रत्येक धर्म व संस्कृति के लोगों पर चमकने वाला था।

आदि अरुल एक नदी के समीप नित्य उपदेश दिया करते थे। वह पापी व्यवहार को परिवर्तित करने की शिक्षा देते थे, जो भी उनके उपदेशों को स्वीकार करता वह उन्हें जल दीक्षा दिया करते थे।

महामंदिर के पण्डितों ने आदि अरुल से पूछा, "क्या आप अभिषिक्त गुरु हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं"। इस पर उन्होंने पुनः प्रश्न किया, "तब आप कौन हैं?"

आदि अरुल ने कहा,

"मैं निर्जन की वाणी हूँ।
मैं अभिषिक्त गुरु का मार्ग सुशोभित कर रहा हूँ"।।

जो पंडित महामंदिर से आये थे उन्होंने प्रश्न किया, "यदि आप अभिषिक्त गुरु नहीं हैं, तो अपने शिष्यों को जल दीक्षा क्यों देते हैं?"

आदि अरुल ने कहा,

"जी हाँ, मैं अपने शिष्यों को जल दीक्षा देता हूँ। भगवान् की वाणी कहती हैं कि मुझ से जल दीक्षा लेने वाले एक व्यक्ति पर परमात्मा अवरोहित होंगे। वही भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार, अभिषिक्त गुरु होंगे। यही मेरे जल दीक्षा देने का कारण है, परन्तु मैं वह गुरु नहीं हूँ। मेरे पश्चात एक और व्यक्ति का आगमन होगा, मैं उनके समक्ष घुटने टेक कर उनके चरण-पादुका स्पर्श करने योग्य नहीं। वह अभिषिक्त गुरु हैं, मैं तो इस संसार के समक्ष उन्हें प्रकाशित करने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

यह वृत्तांत अंजीरा ग्राम के समीप एक नदी का है।

अध्याय ७: गुरु जी की जल दीक्षा

आदि अरुल ने कहा, "मुझे आपसे दीक्षा लेने की आवश्यकता है।"
गुरु जी ने उत्तर दिया, "इस समय तो यही होने दें। हम दोनों के लिए परमात्मा द्वारा निर्धारित समस्त धर्मों को इसी रीति से पूर्ण करना उचित है॥"
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त ३:१५-१६)

एक दिन, श्री गुरु मुक्तिदाता ने आदि अरुल को उन्हें जल दीक्षा देने का अनुरोध किया। श्री गुरु मुक्तिदाता आदि अरुल के मौसेरे भाई थे तथा इस बात से परिचित थे कि उनका जीवन सत्य एवं कृपा से सराबोर है। जब आदि अरुल उन्हें जल दीक्षा दे चुके, स्वर्ग से परमात्मा एक मयूर की भाँती अवरोहित हुए तथा मुक्तिदाता में विराजमान हो गए।

तत्पश्चात, प्रत्येक ने भगवान् की आकाशवाणी सुनी,

"मुक्तिदाता मेरा पुरुषोत्तम अवतार है। वही अभिषिक्त है तथा सम्पूर्णता से मेरे मार्ग पर चलता है।"

अध्याय ८: श्री गुरु मुक्तिदाता की परीक्षा

श्री गुरु मुक्तिदाता भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार थे।
तथापि उन्होंने अपने दुखों के द्वारा आज्ञाओं का पालन करने की शिक्षा ली ॥

वह स्वयं उन सबके लिए अभिषिक्त मुक्तिदाता बन गए।
जो उनकी आज्ञाओं का पालन करते हैं ॥
(स्रोत - श्री वितीर्ण ५:८-९)

इसके उपरान्त, परमात्मा ने श्री गुरु मुक्तिदाता को एक वन में भेजा, जहां उन्होंने चालीस दिनों तक अन्न व जल के बिना कठोर तपस्या किया। उनकी तपस्या के मध्य वहाँ प्रदूषासुर प्रकट हुआ, प्रदूषासुर एक देवदूत था जिस ने विद्रोह किया तथा भगवान् का शत्रु हो गया। वह मनुष्य जाति को छलने के उद्देश्य से इस संसार में प्रदूषित प्रकाश लाता है।

प्रदूषासुर ने श्री गुरु मुक्तिदाता को छलने के तीन प्रयत्न किये।
कहा, "प्रणाम गुरु जी।" गुरु जी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

प्रदूषासुर ने कहा, "कृपया इस पाषाण को रोटी में परिवर्तित करके इसे ग्रहण करें तथा प्रमाणित कर दें कि आप ही भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार हैं।" गुरु जी ने उत्तर दिया, "हमारा धर्म यह शिक्षा देता है कि किसी प्रकार की रोटी नहीं वरन भगवान् का सनातन शब्द ही हमारे जीवन का पुनर्निर्माण करता है।"

इसके उपरान्त, प्रदूषासुर ने श्री गुरु मुक्तिदाता को महामंदिर का शिखर दिखाया। कहा, "गुरु जी, प्रमाण दें कि आप ही भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार हैं, इस महामंदिर के शिखर से छलाँग लगा दें क्यों कि मुक्तिवेद में लिखा है कि भगवान् समस्त अनिष्ट से तुम्हारी रक्षा करेंगे। श्री गुरु मुक्तिदाता ने अपने उत्तर में कहा, "हमारा धर्म यह शिक्षा देता है कि हम भगवान् की परीक्षा न करें।" तत्पश्चात, प्रदूषासुर ने श्री गुरु मुक्तिदाता को कैलाश पर्वत के शिखर पर ले जाकर संसार की समस्त शक्ति व संपत्ति को प्रदर्शित किया।

प्रदूषासुर ने कहा, "भगवान् ने मुझे यह अधिकार दिया है कि मैं अपनी इच्छानुसार किसी को भी इस संसार की समस्त शक्ति व संपत्ति दे दूँ। यदि तुम मेरी पूजा करो, तो ये सब कुछ मैं तुम्हें दे दूंगा।" श्री गुरु मुक्तिदाता ने उत्तर दिया, "यहां से चला जा प्रदूषासुर! हमारा धर्म हमें केवल भगवान् की भक्ति एवं सेवा सिखाता है, किसी और की नहीं।" प्रदूषासुर ने गुरु जी से दूर पलायन किया। इसके उपरान्त भगवान् ने गुरु जी के समक्ष अपने वास्तविक देवदूत भेजे जिन्होंने उनकी आवश्यकताओं की पूर्ती की।

अध्याय १: गुरु जी का प्रारम्भिक शिष्य मंडल

गुरु जी ने कहा, मेरा अनुसरण करो और मैं तुम्हारे द्वारा समस्त मानव जाति को आशीर्वाद प्रदान करूंगा।
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त ४:१९)

आदि अरुल अपने दो शिष्य, अभिजीत तथा ब्रह्मदयाल के संग नदी के समीप खड़े थे। जब उन्होंने श्री गुरु मुक्तिदाता को वहाँ से जाते देखा, तब उन्होंने अपने शिष्यों से कहा,

"यही भगवान् के बलिदान हैं।
यही हम समस्त मनुष्य को कर्म व मृत्यु के बंधन से मुक्त करेंगे"।।

तब, अभिजीत एवं ब्रह्मदयाल गुरु जी का अनुसरण करने लगे। जब गुरु जी ने उन्हें देखा, उन्होंने प्रश्न किया, "आप लोग क्या चाहते हैं?" उन्होंने उत्तर में कहा, "गुरु जी, आपका निवास स्थान कहाँ है?" गुरु जी ने कहा, "पधारें और स्वयं देख लें।"

अभिजीत तथा ब्रह्मदयाल ने प्रस्थान किया एवं उनका निवास स्थान देखा तथा वह दिन उन्होंने पूर्णतः उनके साथ व्यतीत किया। अभिजीत ने वापस लौट कर अपने भाई श्रवण को बताया, "मैंने अभिषिक्त गुरु को पा लिया है।" इसके उपरान्त अभिजीत श्रवण को श्री गुरु मुक्तिदाता से परिचय कराने हेतु ले आये।

अगले दिन, श्री गुरु मुक्तिदाता ने अपने निवास-स्थान जलक्षेत्र जाने का निर्णय लिया। अभिजीत तथा ब्रह्मदयाल भी उनके संग थे और गुरु जी ने अश्विन नामक एक और व्यक्ति को उनके संग चलने को कहा। तब, अश्विन ने अपने मित्र देवदान को गुरु जी के विषय में बताया। उन्होंने कहा, "हमें वह अभिषिक्त गुरु मिल गए हैं जिनका वर्णन ऋषियों ने मुक्तिवेद में किया है। उनका नाम मुक्तिदाता है, वह अनुकृत ग्राम का निवासी राजूभाई के सुपुत्र हैं।" देवदान ने प्रश्न किया, "अनुकृत? हम वहाँ के निवासियों से कोई सम्बन्ध नहीं रखते।" अश्विन ने उत्तर देते हुए कहा, "पधारें और देखें।"

अश्विन देवदान को संग लिए श्री गुरु मुक्तिदाता के समक्ष आ पहुंचे। जब गुरु जी ने देवदान को देखा, उन्होंने कहा, "आप एक ऐसे मनुष्य हैं जिस के मन में कोई छल नहीं।" देवदान ने कहा, "प्रणाम श्री गुरु मुक्तिदाता, जो आप मेरे विषय में कहते हैं यदि वह सत्य वचन है तो इसका ज्ञान आप को कैसे हुआ?" गुरु जी ने कहा, "अश्विन तथा आपके आलाप से पहले मैंने आप को अंजीर के वृक्ष के नीचे देखा था।"

देवदान ने आश्चर्यचकित हो कर कहा, "श्री गुरु मुक्तिदाता, आप ही भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार हैं। यथार्थ, आप ही अभिषिक्त गुरु हैं।"
गुरु जी ने कहा, "आप ने इतनी सहजता से मुझ पर विश्वास कर लिया? आप को मेरे विषय में इसकी तुलना में और भी अधिक महान अनुभव होंगे! आप मुझे स्वर्ग का मार्ग खोलते देखेंगे क्यों कि मैं भगवान् का पुरुषोत्तम अवतार हूँ।"

अध्याय १०: जलक्षेत्र में चमत्कार का प्रारम्भ

गुरु जी ने अपनी स्वर्गीय महिमा प्रकाशित की, तथा उनके शिष्य उनके भक्त हो गए।
(स्रोत - श्री ब्रह्मदयाल २:११)

अभिजीत, श्रवण, ब्रह्मदयाल, देवदान तथा अश्विन, गुरु जी के संग एक विवाह समारोह में गए जो जलक्षेत्र के वसंत ग्राम में आयोजित किया गया था। वधु के पिताश्री अत्यंत क्रोधित हुए क्यों कि समस्त बाराती गण के जलपान के लिए शरबत पर्याप्त नहीं था। श्री गुरु मुक्तिदाता की माता दर्शना ने उनसे निवेदन किया कि वह इसका प्रबंध करे।

गुरु जी ने वधु के भाइयों तथा आत्मीयजनों को आदेश दिया कि मिट्टी के छह बड़े बर्तनों को जल से पूर्णतः भर दिया जाए तथा अतिथियों को वही जल पिलाया जाए। और वह जल अत्यंत मधुर व शीतल शरबत में परिवर्तित हो चुका था। वह इतना स्वादिष्ट था कि वधु के कुटुंब के लिए उनका रसोइया एक चिंता का विषय बन गया। उन्होंने असंतुष्टता प्रकट करते हुए कहा, "आप ने सर्वोत्कृष्ट शरबत केवल बाराती गण को ही क्यों दिया?"

विवाह समारोह समाप्त होने के पश्चात, श्री गुरु मुक्तिदाता दर्शना तथा अपने आत्मीयजनों को ले कर अपने गृह सांत्वना ग्राम चले गए।

अध्याय ११: महामंदिर

मेरे पिताश्री के मंदिर में धर्म के लिए मेरी निष्ठा मेरी आत्मा में एक यज्ञ की भाँती है।
(स्रोत - गीत सूत्र ६१:१)

जब उनका परिवार अपने घर में स्थित हो चुका, गुरु जी ने अपने शिष्य मंडल को लेकर महामंदिर के एक उत्सव के लिए शान्तिधाम की ओर प्रस्थान किया।

जैसे ही वे महामंदिर पहुंचे, उन्होंने देखा कि उत्सव की विकृति प्रत्यक्ष रूप से दिखाई दे रही थी और यह अत्यंत लज्जापूर्ण दृश्य था। श्री गुरु मुक्तिदाता ने एक छड़ी ली और उन समस्त व्यापारियों को खदेड़ दिया जो महामंदिर के उत्सव में धन अर्जित कर रहे थे। उन्होंने उनके मेजों को उलट दिया जिस पर वे मुद्राओं की अदला बदली कर रहे थे।

तत्पश्चात उन्होंने छड़ी नीचे रख कर वहाँ खड़े लोगों से शांतिपूर्वक कहा,

मेरे स्वर्गीय पिताश्री का मंदिर व्यापार का स्थान नहीं है।
बन्द करो यह धर्म का व्यापार।।

पंडित तथा आचार्य गण क्रोधित हुए, अतः उन्होंने श्री गुरु मुक्तिदाता को उनके व्यापार रोकने के अधिकार को प्रमाणित करने के लिए कहा।

गुरु जी ने उत्तर दिया,

यदि तुम इस मंदिर को ध्वस्त कर दो।
मैं तीन दिनों के भीतर इसका पुनर्निर्माण कर दूंगा।।

वहाँ खड़े समस्त लोग व्याकुल थे क्यों कि वे नहीं समझ पाए कि गुरु जी ने अपने शरीर रुपी मंदिर के विषय में कहा।

अध्याय १२: श्री प्रजीत एवं स्वर्गीय जन्म

भगवान् संसार के प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करते हैं।
अतः उन्होंने अपने पुरुषोत्तम अवतार को इस संसार में भेजा ॥

जो भी उन पर विश्वास करेगा वह कर्म व मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाएगा ।
वे लोग सनातन जीवन व्यतीत करेंगे ॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदयाल ३:१६)

श्री प्रजीत महामंदिर के एक आचार्य थे। एक रात्रि, वह तथा उनके मित्र श्री गुरु मुक्तिदाता के संग मंदिर परिसर के बाहर बैठे थे। श्री प्रजीत ने कहा, "गुरु जी, हमें ज्ञान है कि आप सतगुरु हैं जो स्वर्ग से पधारे हैं।" गुरु जी ने अपने उत्तर में कहा,

"समस्त मानव जाति के लिए स्वर्ग से आत्मिक जन्म लेना अनिवार्य है जिस से कि वह मुक्ति राज्य में प्रवेश कर ले।"

श्री प्रजीत के नेत्र डबडबा गए, तथा उन्होंने कहा, "क्या मेरे लिए पुनर्जन्म लेना अनिवार्य है?" गुरु जी ने कहा, "नहीं भ्राता, स्वर्गीय आत्मिक जन्म पुनर्जन्म से भिन्न है। पुनर्जन्म का सम्बन्ध शरीर-रूप से है परन्तु स्वर्गीय जन्म का सम्बन्ध परमात्मा से है।" प्रजीत ने मंदिर से अपने मित्रों को देखा और कहा, "गुरु जी, क्या हम स्वर्गीय जन्म ले सकते हैं?"

श्री गुरु मुक्तिदाता ने कहा। "जी हाँ, हम स्वर्गीय जन्म जल व आत्मा से लेते हैं। मेरी वाणी शुद्ध जल है, यह कर्म के बंधन से हमारे जीव का शुद्धिकरण करता है। तब, आप परमात्मा की शक्ति से स्वर्गीय जन्म ले पाएंगे तथा मुक्ति राज्य में प्रवेश करेंगे।"

अध्याय १३: स्वर्गीय जल

भगवान् शुद्ध आत्मा हैं।
सच्चिदानन्द आत्मा का मूलतत्व है॥

यथार्थ भक्तों का भगवान् की भक्ति सत्-चित्-आनंद में करना अनिवार्य है।
यही वे भक्त हैं जिनकी खोज में मुझे भगवान् ने भेजा है॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदयाल ४:२४)

श्री प्रजीत के संग समय व्यतीत करने के पश्चात श्री गुरु मुक्तिदाता तथा उनके शिष्य वापस जलक्षेत्र के लिए प्रस्थान किया। शिष्य हतप्रभ हुए जब गुरु जी ने मैनाक के मार्ग से होते हुए यात्रा करने का निर्णय लिया। जलक्षेत्र के वर्ण एवं जाति के लोग मैनाक ग्राम के जातियों से सम्बन्ध नहीं रखते थे।

वे तीर्थ में अवर्ण ग्राम के समीप आ पहुंचे, वहाँ एक कुआँ था, अतः श्री गुरु मुक्तिदाता ने उधर आराम करने के उद्देश्य से आसन लिया। एक स्त्री वहाँ के कुएं से जल निकाल रही थी। गुरु जी ने उनसे जल पिलाने का निवेदन किया। स्त्री ने हतप्रभ हो कर गुरु जी से प्रश्न किया, "क्या आप को हमारे कुएँ से जल पान करने की इच्छा है? क्या आप को ज्ञान है कि हम कौन हैं? गुरु जी ने उन्हें उत्तर दिया,

जो भी इस कुएं का जल पिए उसकी तृष्णा पुनर्जागृत होगी।
परन्तु जो उस जल को पिए जो मैं देता हूँ, वह कभी तृषित नहीं होगा।।

मैं उन्हें उनके मन में उपहारस्वरूप जीवंत जल का वसंत दूंगा।
वही सनातन जीवन की ओर उनका नेतृत्व करेगा।।

स्त्री ने प्रश्न किया, "गुरु जी, क्या हमें वर्णाश्रम धर्म के परम्परानुसार आपकी सेवा करने की आज्ञा है?" श्री गुरु मुक्तिदाता ने अपने उत्तर में कहा, "भगवान् का कोई स्वरुप नहीं है, अतः मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा एवं गिरिजाघर के लोग मुझे अपने गुरु का स्थान दे सकते हैं। मेरी सेवा तथा भक्ति आत्मा से है जो सच्चिदानंद स्वरुप है।" स्त्री ने कहा, "जब अभिषिक्त गुरु पधारेंगे, वह हमें समस्त विद्या में शिक्षित करेंगे। श्री गुरु मुक्तिदाता ने कहा, "मैं वही हूँ।"

स्त्री ने गुरु जी से विदा लिया एवं अपने ग्राम चली गई। उन्होंने लोगों को उस घटना का वर्णन किया जो कुएं के समीप घटित हुई तथा श्री गुरु मुक्तिदाता के कथनों का भी वर्णन किया।

उन्होंने प्रश्न किया, "क्या वह भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार, अभिषिक्त गुरु हो सकते हैं?" गुरु जी ने उस अवर्ण ग्राम में दो दिनों तक वास किया। उन्होंने वहाँ के निवासियों के संग खान-पान भी किया। वहाँ कई लोगों ने उन्हें अपना गुरु स्वीकार किया।

अध्याय १४: श्री गुरु मुक्तिदाता की वाणी

हे प्रभु, यदि आप मुझे स्वास्थ्य प्रदान करें तो मैं स्वस्थ हो जाऊंगा ।
मैं केवल आपकी ही पूजा करूंगा ॥
(स्रोत - ऋषि सुजन १७:१४)

श्री गुरु मुक्तिदाता एवं उनके शिष्य मंडल झीलक्षेत्र को पुनः लौट गए। झीलक्षेत्र के समस्त निवासी गण ने उनके गले में पुष्पमाला डाल कर उनका स्वागत किया क्यों कि वे महामंदिर में दिखाए गए उनके प्रतिक्रिया से प्रसन्न थे।

जब गुरु जी एवं उनके शिष्य वसंत नगर में थे, एक धनी व शक्तिशाली व्यक्ति उनके निकट आ पहुंचे, अपने नेत्र में अश्रु लिए उन्होंने गुरु जी से विनती की, "श्री गुरु मुक्तिदाता, मेरा पुत्र तरुण होते हुए भी मृत्यु के निकट है। कृपया सांत्वना चलें तथा उसे स्वास्थ्य प्रदान करें।

गुरु जी ने कहा, "यदि तुम्हे चमत्कार का अनुभव नहीं है, तुम मुझ पर आस्था नहीं रख पाओगे। जाओ, तुम्हारा सुपुत्र जीवित रहेगा।"

उस व्यक्ति ने आस्था रखी कि गुरु जी के शब्द सत्य वचन हैं तथा वहाँ से चला गया। उनका दास उन्हें मार्ग में मिला और बताया कि उनके पुत्र का ज्वर जा चुका है एवं वह स्वस्थ है।

जब उसे बोध हुआ कि केवल गुरु जी के "तुम्हारा सुपुत्र जीवित रहेगा" कहने मात्र से ही उसका पुत्र स्वस्थ हो गया, उसने एवं उसके समस्त परिवार ने मुक्तिदाता को अपना गुरु स्वीकार किया।

अध्याय १५: अस्वीकृति

मानव जाति ने उसे तिरस्कार व अस्वीकार किया।
अतः वह एक दुखी मनुष्य की भाँती हमारे विलाप को समझता है॥
(स्रोत - ऋषि मुक्तेश्वर ५३:३)

शिष्य मंडल अपने गृह लौट गए, श्री गुरु मुक्तिदाता ने विभक्त ग्राम के लिए प्रस्थान किया जो उनके माता-पिता का निवास स्थान था।

वह मंदिर में आयोजित एक सत्संग में गए तथा मुक्तिवेद से इस श्लोक का पाठ किया,

परमात्मा की शक्ति के द्वारा हुआ।
हुआ मैं अभिषिक्त हुआ।।

मैं निर्धनों को शुभ सन्देश देने वाला हूँ।
मैं दलित व बंदी गण की मुक्ति घोषित करने वाला हूँ।।

मैं नेत्रहीन को ज्योति प्रदान करता हूँ।
भगवान् की कृपा युग से मैं साक्षात्कार कराता हूँ।।

उनके पाठ की समाप्ति के पश्चात, श्री गुरु मुक्तिदाता ने कहा, "यह श्लोक भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार की सेवा, अर्थात मेरी सेवा का वर्णन करता है। "मैं वही हूँ।" सत्संगी आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने विश्वास नहीं किया कि वही भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार हैं।

कई लोगों ने कहा, "अरे! यह तो राजूभाई का पुत्र है, है न?" गुरु जी को उनके विचार का ज्ञान था, अतः उन्होंने कहा, "यह कहावत यथार्थ है कि एक आचार्य का सम्मान उनके आत्मीयजन के मध्य नहीं होता। अपने कृपापूर्ण आशीर्वाद प्रदान करने में अब मैं उन विदेशियों को प्रधानता दूंगा जो हमारे मध्य निवास करते हैं।" ग्राम पूर्ण रूप से क्रोधित हो उठा तथा जनसमूह ने गुरु जी की हत्या करने का प्रयत्न किया, परन्तु गुरु जी वहाँ से शांतिपूर्वक चले गए।

अध्याय १६: कृपापूर्ण आशीर्वाद

चले श्री गुरु मुक्तिदाता झीलक्षेत्र को।
देते हुए मंदिर में उपदेश जन गण को॥

करते हैं मुक्तिराज्य के शुभ समाचार को घोषित।
हरे उनके प्रत्येक रोग व दोष जो हैं आत्मिक प्रदूषण से ग्रसित॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १:३५)

विभक्त से प्रस्थान करने के पश्चात श्री गुरु मुक्तिदाता पुनः झीलक्षेत्र चले गए तथा सरोवर के किनारे-किनारे चलने लगे। उनकी भेंट श्रवण तथा अभिजीत से हो गयी तथा उन्होंने गुरु जी के संग आसन लिया। वे कहने लगे, "क्यों कि हम आपके संग यात्रा पर गए थे हम मछली नहीं पकड़ सके अतः इस समय हम पर अपने परिवार के भरण-पोषण का उत्तरदायित्व है।"

श्री गुरु मुक्तिदाता ने कहा, "जाएँ तथा गहरे सागर में पुनः जाल डाल कर प्रयत्न करें।"

श्रवण व अभिजीत ने विश्वास किया कि गुरु जी के वचन यथार्थ हैं तथा प्रस्थान किया। वे इतनी मछलियां पकड़ने में सक्षम हुए कि जाल विभंजित होने लगा।अपनी नाव को तीर पर लाने के पश्चात, श्रवण ने गुरु जी के चरणों में प्रणाम किया और कहा, "मैं आपके कृपापूर्ण आशीर्वाद के योग्य नहीं। गुरु जी, मैं एक पापी मनुष्य हूँ।

श्री गुरु मुक्तिदाता ने कहा,

"शान्ति हो, भाई श्रवण। मैं तुम्हे यही कृपापूर्ण आशीर्वाद समस्त मानवता को प्रदान करना सिखाऊंगा। इस चमत्कार के पश्चात, ब्रह्मदयाल के भ्राता बाहुयोध ने मुक्तिदाता को अपना गुरु स्वीकार किया तथा उनके शिष्य मंडल में सम्मिलित हो गए।

अध्याय १७: गुरु जी की कृपापूर्ण शक्ति

किया स्वाधीन उन्होंने प्रदूषासुर से हमें।
दे दी मुक्ति रोगों व दोषों से हमें॥
(स्रोत - ऋषि मुक्तेश्वर ५३:५)

इसके उपरान्त, शिष्य मंडल श्री गुरु मुक्तिदाता तथा उनके आत्मीयजनों के संग समय व्यतीत करने के उद्देश्य से सांत्वना गए। वे प्रायः ग्रामवासियों के संग मंदिर में सत्संग के लिए एकत्र होते थे। जब गुरु जी मुक्तिराज्य का उपदेश दे रहे थे एक व्यक्ति चीत्कार कर उठा,

"आप क्या चाहते हैं भगवान् के उत्तम अवतार, मुक्तिदाता अभिषिक्त? क्या आप हमें नष्ट करने के उद्देश्य से यहाँ पधारे हैं?" श्री गुरु मुक्तिदाता ने उसको देखा तथा विराट अधिकार का प्रदर्शन करते हुए आदेश दिया, "शांत रह, तथा उस मनुष्य से बाहर निकल जा प्रदूषासुर।" प्रदूषासुर शांतिपूर्वक उस व्यक्ति के शरीर को छोड़कर चला गया। सत्संगी हतप्रभ थे तथा इसकी चर्चा करने लगे, "यह मुक्तिदाता किस प्रकार के गुरु हैं? इनका कथन अधिकार पूर्ण व कर्म शक्तिपूर्ण है!"

श्री गुरु मुक्तिदाता एवं शिष्य मंडल श्रवण तथा अभिजीत के परिवार के संग समय व्यतीत करने के लिए गए। गुरु जी ने श्रवण तथा अभिजीत के गृह में प्रवेश करते ही जान लिया कि श्रवण की सास रुग्ण है परन्तु ज्यों ही उन्होंने उनके भुजा को स्पर्श किया उनका ज्वर चला गया तथा वह स्वस्थ हो गई। तब उन्होंने उनके लिए चाय तथा जलपान का प्रबंध किया एवं यह समाचार समस्त ग्राम में प्रसारित हो गया।

उस संध्या ग्राम के हर परिवार से लोग आकार श्रवण तथा अभिजीत के गृह में एकत्र हुए। उन सब के परिवारों में ऐसे सदस्य थे जो रुग्ण थे अथवा जिन्हें शारीरिक दोष था। जब श्री गुरु मुक्तिदाता लोगों के रोग हरने के उद्देश्य से उन्हें स्पर्श करते थे, तब प्रदूषासुर के बहुतेरे दास प्रेतात्मा चीत्कार करते थे, "आप भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार हैं!" परन्तु गुरु जी उन्हें बोलने का अवसर नहीं देते थे और प्रत्येक मनुष्य का रोग हर लेते थे।

अध्याय १८: यात्रा

उन्होंने हमारा दोष हर लिया ।
तथा हमें दोष मुक्त कर दिया ॥
(स्रोत - ऋषि मुक्तेश्वर ५३:४)

इसके उपरान्त, गुरु जी तथा उनके शिष्य मंडल ने समस्त जलक्षेत्र की एक यात्रा को प्रस्थान किया, यह यात्रा सेवा की तीर्थयात्रा थी। उन्होंने जलक्षेत्र के कई मंदिरों में उपदेश दिए एवं बहुतों को स्वास्थ्य प्रदान किया। यात्रा के मध्य एक कोढ़ी व्यक्ति श्री गुरु मुक्तिदाता के समक्ष आ गिरा तथा उसे स्वस्थ करने की विनती करने लगा। कहा, "क्या आप मेरे समान किसी मनुष्य का रोग हरने में अग्रसर होंगे? मुझे ज्ञान है कि आप मुझे स्वास्थ्य प्रदान कर सकते हैं।"

श्री गुरु मुक्तिदाता ने कहा, "अवश्य, मैं इच्छा रखता हूँ! स्वस्थ हो जाएँ।"

जब उस व्यक्ति ने खड़े होकर देखा कि गुरु जी ने उसे कोढ़ मुक्त कर दिया है, तो वह भगवान् का धन्यवाद व उनकी जय जयकार करने लगा। श्री गुरु मुक्तिदाता ने कहा, "किसी से न कहिये कि यह कैसे हुआ, केवल मंदिर जाकर पुजारियों को अपना शुद्धिकरण दिखा दें।"

परन्तु, उस व्यक्ति ने यह प्रसारित कर दिया कि श्री गुरु मुक्तिदाता ने उसको स्वास्थ्य प्रदान किया है। विराट जनसमूह ने गुरु जी तथा उनके शिष्य मंडल को घेरे रखना आरम्भ कर दिया, अतः उधर से पलायन कर उन्होंने सांत्वना में स्थित अपने गुरुकुल में डेरा डाला।

अध्याय १९: गुरुकुल

पाप की क्षमा देने का अधिकार है मुझे।
रोग हरण करने का भी अधिकार है मुझे॥
(स्रोत - श्री यौद्धेश २:१)

श्री गुरु मुक्तिदाता के गुरुकुल में लोग सत्संग के लिए एकत्र हो रहे थे। एक दिन, चार लोग अपने एक अचल मित्र को लेकर गुरुकुल पहुंचे, उन्होंने देखा कि गुरुकुल पूर्णतः भरा हुआ था, अतः वे छत पर गए तथा उधर एक विशाल छिद्र बनाकर अपने मित्र को गुरुकुल के भीतर श्री गुरु मुक्तिदाता के समक्ष धीमे से उतार दिया।

गुरु जी ने उन चारों का तथा पक्षाघात से ग्रसित उस व्यक्ति की आस्था को देखा और कहा, "मैं तुम्हारे पाप क्षमा करता हूँ।"

उस जन समूह में खड़े पंडित व आचार्य गण द्वेष से भर गए क्यों कि मुक्तिदाता ने पक्षाघात से ग्रसित व्यक्ति के पाप क्षमा किये। गुरु जी को उनके विचारों का ज्ञान था अतः उन्होंने कहा, "तुम क्यों अनुमान लगाते हो कि मुझे इस मनुष्य को क्षमा करने का कोई अधिकार नहीं? मैं तुम्हे प्रदर्शित करूंगा कि मुझे कर्म व मृत्यु के बंधन से मुक्त करने का अधिकार है।

इसके उपरान्त गुरु जी ने कहा, "उठो व चलो।"

वह व्यक्ति उठ खड़ा हुआ तथा वह और उनके मित्र वहाँ से चले गए। सब लोग श्री गुरु मुक्तिदाता के प्रेम व अधिकार के दर्शन पाकर आश्चर्यचकित हुए तथा उनके मन में एक श्रद्धा युक्त भय का प्रवाह होने लगा।

अध्याय २०: पाप, परंपरा तथा पंडित गण

जाओ! व क्या है इसका आशय, तुम जान लो अभी ।
रोगी को है मांग वैद्य की, स्वस्थ को नहीं ॥

दया श्रेष्ट है मेरे लिए धार्मिक पक्षपात नहीं ।
पापियों को बुलाता हूँ मैं धार्मिक को नहीं ॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त ९:१२-१३)

एक दिन श्री गुरु मुक्तिदाता सरोवर के किनारे उपदेश दे रहे थे। उनके तथा उनके शिष्य का परिचय ब्रह्मदत्त नामक एक कर समाहर्ता अधिकारी से हुआ।

श्री गुरु मुक्तिदाता ने उनसे कहा, "मुझे अपना गुरु स्वीकार करें।"

ब्रह्मदत्त ने कर संग्रहण का भ्रष्टाचार त्याग दिया तथा गुरु जी व शिष्य मंडल को रात्रि भोज के लिए अपने गृह में आमंत्रित किया।

ब्रह्मदत्त ने बहुत से कर समाहर्ता अधिकारियों को भी गुरु जी के संग भोजन करने का आमंत्रण दिया था। वहाँ और भी कई लोग उपस्थित थे क्यों कि वे लोग श्री मुक्तिदाता को अपना गुरु स्वीकार कर चुके थे। अत्यंत रूढ़िवादी सम्प्रदाय के कुछ पंडित एवं आचार्य गण ने गुरु जी को पापियों के संग भोजन करते देखा अतः उन्होंने प्रश्न किया कि वह ऐसा क्यों करते हैं?

गुरु जी ने विस्तार से उत्तर दिया कि उनका आगमन इस कारण से हुआ है कि वह अधर्मियों को उनके पापों का प्रायश्चित करने में सहायता करे तथा उनका उद्धार करे, न कि उन्हें मोक्ष प्रदान करे जो धार्मिक व अभिमानी हैं।

अध्याय २१: नेत्रहीन का नेत्रहीन को मार्ग दिखाना

मेरे पिताश्री प्रत्येक दिन अपना कार्य जारी रखते हैं।
वैसे ही मेरा कार्य भी जारी रहता है॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदयाल ५:१७)

श्री गुरु मुक्तिदाता अपने शिष्य मंडल को लेकर एक उत्सव के लिए शान्तिधाम पहुंचे। शान्तिधाम में एक विख्यात कुंड था जहाँ रोगी तथा अचल श्रद्धालु जाया करते थे। उनकी मान्यता थी उसमें पवित्र जल था जो उन्हें स्वास्थ्य प्रदान कर देगा। गुरु जी ने उधर पक्षाघात से ग्रसित एक श्रद्धालु को देखा जो ३८ साल से वहाँ प्रत्येक दिन उपस्थित होता रहा था परन्तु उस कुंड का पवित्र जल उसकी सहायता करने में विफल रहा।

गुरु जी ने कहा, "क्या आप स्वस्थ होना चाहते हैं?" श्रद्धालु ने कहा, "जी हाँ! मुझे कुंड तक पहुँचने में सहायता की आवश्यकता है जिससे कि पवित्र जल मुझे स्वास्थ्य प्रदान करे।"

गुरु जी सरलता से कहा, "उठ जाएँ, अपनी शय्या उठाकर चलना प्रारम्भ करें। "उस श्रद्धालु ने अपनी शय्या उठायी तथा चलना प्रारम्भ कर दिया। महामंदिर के पण्डितों ने उसे देखा तथा शेष बचे पण्डितों व आचार्य गण के समक्ष इस दृश्य का वर्णन किया। उन लोगों ने उस श्रद्धालु की उपस्थिति का आदेश दिया तथा उससे प्रश्न किया, "तुमने विश्राम वार के दिन अपनी शय्या उठायी है, तुम्हे ज्ञान होगा कि यह हमारी परंपरा के विरुद्ध है!"

इस पर श्रद्धालु ने कहा, "जी, मुझे इसका ज्ञान है परन्तु जिन्होंने मुझे स्वास्थ्य प्रदान किया उन्होंने मुझे मेरी शय्या उठाकर चलने को कहा एवं जनसमूह में लुप्त हो गए।

पण्डितों ने प्रश्न किया, "कौन है यह व्यक्ति जिसने तुम्हें विश्राम वार के दिन कार्य करने का आदेश दिया?" श्रद्धालु ने उत्तर दिया, "मुझे ज्ञान नहीं कि वह कौन हैं व कैसे दिखते हैं।"

कुछ समय के उपरान्त गुरु जी ने उसे मंदिर में देखा तथा कहा, "अब आप स्वस्थ हो चुके हैं परन्तु पुनः पापमय जीवन न व्यतीत करें अन्यथा जितनी क्षति पहले हुई थी उससे भी अधिक होगी।

तब, उस श्रद्धालु ने पण्डितों को बता दिया कि उसका दोष हरने वाले श्री गुरु मुक्तिदाता हैं। महामंदिर के पंडित व आचार्य गण ने निर्णय लिया कि गुरु जी की मृत्यु आवश्यक है क्यों कि उन्होंने न केवल विश्राम वार की परंपरा का खंडन किया परन्तु भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार होने की घोषणा भी की।

अध्याय २२: गुरु जी के बारह दूत

उपज तैयार है, सेवक अत्यल्प हैं।
हे तात! अपनी कृषि भूमि में सेवक भेजें॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १:३७-३८)

गुरु जी अपने शिष्य मंडल को संग लेकर पुनः जलक्षेत्र लौट आये। जन गण में उनके चमत्कार की गाथाएं प्रसारित हो रही थीं, उनके पुनरागमन का समाचार सुनकर एक जनसमूह एकत्र हुआ।

जिस में विभिन्न जाति के बीमार व पीड़ित उपस्थित थे तथा उन्हें गुरु जी की मुक्ति की अत्यंत आवश्यकता थी, अतः उन्होंने उनके रोग हर लिए।

उस रात्रि, श्री गुरु मुक्तिदाता ने तपस्या की एवं वह प्रातः काल पुनः अपने शिष्य मंडल के सम्मुख हुए। उन्होंने समस्त शिष्यों में से बारह को अपने दूत के रूप में नियुक्त किया।

गुरु जी की इच्छा थी कि उनके दूत हर समय उनके संग रहे जिससे कि वह उन्हें मुक्तिराज्य की सेवा एवं भक्ति के विषय में समस्त ज्ञान दे सके। उन्होंने अपने दूतों को रोगियों तथा पीड़ितों को स्वास्थ्य प्रदान करने का अधिकार भी दिया क्यों कि वह उन्हें अपने नाम पर उपदेश देने के उद्देश्य से तथा मुक्तिराज्य के यथार्थ अनुभव प्रदान करने के उद्देश्य से भेजने वाले थे।

उन बारह दूतों के नाम इस प्रकार हैं:

श्री अभिजीत तथा उनके भ्राता श्री श्रवण,
श्री ब्रह्मदयाल तथा उनके भ्राता बाहुयोध,
श्री आश्विन तथा उनके भ्राता देवदान,
भाई अक्षय के तीन सुपुत्र - श्री ब्रह्मदत्त, श्री प्रातरूप तथा बाहुयोध,
क्रांतिकारी श्री श्रवण एवं करियतनगर निवासी श्री वंदन (जिसने गुरु जी से विश्वासघात किया)।

अध्याय २३: अधिकार

प्राकृतिक असदस्य मुक्तिराज्य में होंगे।
प्राकृतिक सदस्य बाहर होंगे॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त ८:११-१२)

श्री गुरु मुक्तिदाता पुनः सान्तवना पहुंचे। एक विदेशी सेनापति गुरु जी की शक्ति एवं कृपा से परिचित था अतः उसने स्थानीय मंदिर के कुछ पुजारियों से निवेदन किया कि वे गुरु जी को उसके घर जाने को कहे जिससे की उसका रोगी सेवक स्वस्थ हो जाए।

आचार्य गण ने गुरु जी से आग्रह करते हुए कहा, "यह विदेशी इस योग्य है कि आप उनके गृह जा कर उनके रोगी सेवक को स्वस्थ्य प्रदान करें। "वह हमारे धर्म व संस्कृति का सम्मान करता है तथा उसने हमारे मंदिर के निर्माण में भी सहायता किया था।

गुरु जी सहमत होकर आचार्य गण के पीछे विदेशी सेनापति के आश्रय के लिए निकल पड़े। मार्ग के मध्य ही उन्हें सेनापति के कुछ मित्र मिल गए व उनसे कहा,

"प्रणाम गुरु जी। सेनापति जी को ज्ञान है कि वह इस योग्य नहीं कि आप उनके आश्रय में प्रवेश करें।" गुरु जी ने उस आचार्य को देखा जिन्होंने कहा था कि सेनापति योग्य हैं, परन्तु अब आचार्य चुप थे। सेनापति के मित्रों ने अपनी बात जारी रखी,

"सेनापति को अधिकार का भी ज्ञान है क्यों कि वह स्वयं एक अधिकार के बाध्य हैं तथा बहुतेरे सैनिक उनके अधिकार के बाध्य हैं। उन्हें अधिकारपूर्ण शब्द की शक्ति का ज्ञान है। प्रत्येक व्यक्ति व वस्तु आपके अधिकार का बाध्य है। गुरु जी, उन्हें पूर्ण आस्था है कि आपका अधिकारपूर्ण शब्द उनके सेवक को स्वस्थ कर देगा।

श्री गुरु मुक्तिदाता प्रफुल्लित हो उठे तथा अपने संग खड़े आचार्य गण व दूतों से कहा,

"इस विदेशी में मेरी अपनी जाति के लोगों से अधिक विशुद्ध आस्था है।"

गुरु जी ने सेनापति के मित्रों से कहा, "आप लोग विदा ले सकते हैं। आपकी आस्था के अनुसार, तथास्तु!"

और उसी क्षण वह सेवक स्वस्थ हो गया।

अध्याय २४: एक और यात्रा

भगवान् के अवतार हमारे मध्य हैं।
भगवान् की दयादृष्टि हम पर है ॥
(स्रोत - श्री भास्वर ७:१६)

गुरु जी तथा उनके बारह दूत समस्त जलक्षेत्र की एक और यात्रा पर निकले। सुहानीपुरम ग्राम में प्रवेश करते ही दूत मंडल ने नदी के तीर पर एक जनसमूह को एकत्र होते देखा।

वे पदयात्रा करते हुए ग्राम के मध्य पहुंचे और देखा कि लोग एक भवन से एक मृत शरीर लिए चले आ रहे हैं। गुरु जी को बोध हुआ कि एक विधवा नारी के पुत्र का निधन हो चुका है। उस नारी के नेत्रजल ने गुरु जी के हृदय को करुणा से सराबोर कर दिया, अतः उन्होंने उनके समीप जा कर कहा, "कृपया विलाप न करें!" तत्पश्चात, श्री गुरु मुक्तिदाता ने पुत्र के शरीर को स्पर्श किया व कहा,

"हे युवक! उठ जाओ।"

युवक उठ बैठा और अपनी माता की खोज में लोगों से प्रश्न करने लगा! विधवा नारी ने आश्चर्यचकित होकर अपने पुत्र को साथ लिया तथा अपने आश्रय को दौड़ गयी। समस्त ग्राम आश्चर्यचकित होकर श्री गुरु मुक्तिदाता की जय जयकार करने लगा।

श्री गुरु मुक्तिदाता एवं उनके बारह दूतों ने समस्त झीलक्षेत्र की यात्रा जारी रखी। वे लोगों के रोग हरते हुए प्रत्येक ग्राम में मुक्तिराज्य का उपदेश देते रहे।

अध्याय २५: मुक्तिराज्य व परिवार

यदि मैं परमात्मा के द्वारा पीड़ितों को मुक्त करता हूँ।
तो मुक्तिराज्य तुम्हारे मध्य आ पहुंचा है॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १२:२८)

श्री गुरु मुक्तिदाता तथा उनके दूतों ने समस्त सांत्वना की यात्रा की समाप्ति श्री गुरु मुक्तिदाता के गुरुकुल में की। विभिन्न जाति से इतने रोगी व पीड़ित श्रद्धालु उनके समक्ष पहुंचे कि गुरु जी तथा उनके शिष्य भोजन भी न कर सके और इस विषय ने स्थानीय निवासियों को अप्रसन्न कर दिया, अतः वे निकटवर्ती ग्राम गए जहाँ दर्शना थी और उनके समक्ष इसके विरुद्ध अभियोग किया।

शान्तिधाम में महामंदिर के पंडित एवं आचार्य गण इस यात्रा से अवगत थे अतः वे गुरुकुल पहुंचे, जब उन्होंने वहाँ का दृश्य देखा वे क्रोधित हुए तथा जनसमूह से कहा,

"श्री गुरु मुक्तिदाता प्रदूषासुर की दुष्ट शक्ति के द्वारा रोगियों तथा पीड़ितों को मुक्ति प्रदान करता है, न कि परमात्मा की शक्ति से।" श्री गुरु मुक्तिदाता को ज्ञान था कि वे क्या कर रहे हैं। अतः वह उनके समीप गए व बोले,

जो मेरे संग नहीं वह मेरे विरुद्ध है।
जो मेरे संग एकत्र नहीं वह अस्तव्यस्त है।।

उसी क्षण दर्शना तथा श्री गुरु मुक्तिदाता के परिवार का भी आगमन हुआ, उन्होंने आचार्य गण को तथा बारह दूतों को एवं रोगी, पीड़ितों को गुरुकुल में आते-जाते देखा एवं चकित हुए क्यों कि वह गुरुकुल वास्तव में उनका आश्रय था।

किसी ने श्री गुरु मुक्तिदाता को सूचना दी कि उनके परिवार को उनसे मिलने की इच्छा है। गुरु जी ने अपने उत्तर में कहा,

जो मेरे स्वर्गीय पिताश्री की इच्छा पूर्ण करे वह मेरा परिवार है।

गुरु जी ने अपने प्राकृतिक परिवार की इच्छाओं का पालन करते हुए अपने दूत मंडल को लेकर गुरुकुल से दूर, सरोवर के समीप प्रस्थान किया। उनके बहुतेरे भक्त गण वहाँ एकत्र हुए, अतः गुरु जी ने निर्णय लिया कि अब वह उनके समक्ष मुक्तिराज्य के सिद्धांतों की व्याख्या करेंगे।

अध्याय २६: मुक्तिराज्य अनुरूपता – प्रथम भाग

स्त्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १३

मुक्तिदाता के बारह दूत, वह धनि स्त्री जो दूत मंडल की सदस्या थी तथा गुरु जी के कुछ अन्य शिष्य एवं भक्त गण सरोवर के समीप बैठ गए तथा मुक्तिराज्य की अनुरूपता का उपदेश सुनना प्रारम्भ किया।

"श्री गुरु मुक्तिदाता का मुक्तिराज्य उस नवविवाहित स्त्री की भाँती है जो अपने विवाह के चूड़ियों की खोज में है। वह अपने समस्त सेवकों को भवन को टटोलने का आदेश देती है, जब उन्हें चूड़ियाँ मिल जाती हैं, वह तथा उनके सेवक आनंदित होते हैं।"

"श्री गुरु मुक्तिदाता का मुक्तिराज्य गुलाब बीज क्रय करने वाले एक किसान की भाँती है। कुछ बीज सुगन्धित गुलाब उत्पन्न करते हैं परन्तु कुछ कांटेदार पौधे उगाते हैं। किसान कांटेदार पौधों को उखाड़ फेंकने की इच्छा प्रकट करता है परन्तु उसके पिता कहते हैं, "गुलाब तथा कांटेदार पौधों को साथ बढ़ने दो। यह हमारे शत्रु ने किया है। जब पौधों से पुष्प निकल आएंगे, हम अत्यंत सावधानी से गुलाबों को चुनकर कांटेदार पौधों का दहन कर देंगे एवं कभी उस व्यक्ति से बीज क्रय नहीं करेंगे।"

"श्री गुरु मुक्तिदाता का मुक्तिराज्य उस मसाले की भाँती है जिसे एक स्त्री तरकारी में मिलाती है जिससे कि पूरा भोजन स्वादिष्ट हो जाए।"

"श्री गुरु मुक्तिदाता का मुक्तिराज्य प्रच्छन्न सोना प्राप्त करने की भाँती है।"

एक निर्धन किसान अपनी एकमात्र सुपुत्री के विवाह का प्रबंध कर रहा था। यौतक स्वरुप उसे बारह तोला सोना भेंट में देना था। एक दिन उसे अपने कृषि भूमि के समीप एक मैदान में एक थैला मिला, वह हतप्रभ हुआ जब उसने उस थैले में चौबीस तोला सोना पाया। वह आनंद के अश्रु न रोक सका तथा उसने सोने से भरा वह थैला एक पाषाण के नीचे दबा दिया, तत्पश्चात उसने अपने भ्राता को अपनी छोटी सी भूमि बेच दी।

छोटी सी कृषि भूमि के बदले मिली मुद्रा से उसने उस मैदान को मोल लिया जहाँ सोना गड़ा था। महान आनंद के साथ उसने उपहार स्वरुप बारह तोला सोना अपने समधी को दिया। इसके उपरान्त उसने उस मैदान में एक झोपड़ी बनायीं एवं श्री गुरु मुक्तिदाता तथा मानव जाति की सेवा में एक सादा व सरल जीवन व्यतीत किया।

अध्याय २७: मुक्तिराज्य अनुरूपता – द्वितीय भाग

स्त्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १३

"श्री गुरु मुक्तिदाता का मुक्तिराज्य विवाह के आभूषण की खोज की भाँती है। एक धनि वैश्य की इच्छा थी कि वह अपनी सुपुत्री को उसके विवाह के उपलक्ष में उपहार स्वरुप कोई आभूषण दे, उसके एक सुनार मित्र ने उसे एक मोती जड़ित मंगलसूत्र दिखाए जो खरे सोने का था। वैश्य इसे किसी भी कीमत पर क्रय करने को तैयार था अतः उसने अपनी भूमि तथा व्यवसाय बेचकर अपनी सुपुत्री के लिए वह मंगलसूत्र ले लिया।"

श्री गुरु मुक्तिदाता का मुक्तिराज्य प्रत्येक सम्प्रदाय में सम्पूर्णता लाता है। गुरु जी ने कहा था, "यदि किसी सम्प्रदाय का आचार्य मुक्तिराज्य में एक सेवक हो जाए, वह पुरातन एवं नूतन, दोनों प्रकार के शिक्षाओं का ज्ञाता हो जाता है। अर्थात, जिस आचार्य को मुक्तिराज्य का ज्ञान हो, वह अपने सम्प्रदाय को सत्य से अवगत करा सकता है।

"श्री गुरु मुक्तिदाता की वाणी मुक्तिराज्य का बीज है"

कुछ बीज कठोर मन में गिरते हैं।
वह मन पूर्णतः उनकी अवहेलना करता है।।

कुछ खोखले मन में गिरते हैं।
वह मन शीघ्रता से उन्हें अस्वीकृत करता है।।

कुछ बीज स्वार्थी मन में गिरते हैं।
वह अंततोगत्वा उन्हें चित्त से उतार देता है।।

कुछ बीज भले मन में गिरते हैं।
जिसे पूर्ण रूप से बीजों का अनुभव होता है।।

श्री गुरु मुक्तिदाता सरोवर के समीप अपने शिष्यों को इन अनुरूपताओं का वर्णन करते हैं।

अध्याय २८: विदेशी

अपने घर जाओ, अपने परिवार, अपने गाँव जाओ ।
श्री गुरु मुक्तिदाता ने की है दया तुम पर यह जा कर उन्हें बताओ ॥
(स्रोत - श्री यौद्धेश ५:१९)

श्री गुरु मुक्तिदाता ने अपने दूतों को सरोवर के पार, दस नगर क्षेत्र ले जाने का निर्णय लिया। वह केवल विदेशी समुदाय का निवास स्थान था, शिष्य गण को ज्ञान न था कि उनसे क्या अपेक्षा की जाए।

वेगपूर्वक चलने वाली एक आंधी ने प्रचंड शक्ति से उनके नाव पर प्रहार किया। शिष्य मंडल भयभीत हो गए, परन्तु गुरु जी निद्रा में थे, अतः उन्होंने पुकारा "गुरु जी, कृपया उठ जाइये! इस आंधी में हमारी मृत्यु होने वाली है। "गुरु जी ने उठकर कहा "रुक जा!" आंधी रुक गई तथा सरोवर शांत हो गया।

गुरु जी ने मंदहास करते हुए अपने दूतों वे कहा, "तुम्हारी आस्था को क्या हो गया है?"

कुछ समय पश्चात, वे जबरोण नगर पहुंचे। उन्होंने एक पीड़ित मनुष्य को देखा जो एक समाधि स्थल में वास करता था तथा उसके भीतर प्रदूषासुर के सैंकड़ों दुष्ट प्रेत आत्माओं का निवास था। ज्यों ही उसने श्री गुरु मुक्तिदाता को देखा, वह समाधि स्थल से दूर भागने लगा। वह गुरु जी के समक्ष खड़ा हो गया और कहने लगा, "आप यहाँ हम से क्या लेने आये हैं, श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त! हमें ज्ञान है कि आप भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार हैं! कृपया हमारा नाश न करें!"

समीप ही शूकरों का एक झुण्ड चला आ रहा था, गुरु जी ने उन प्रेतात्माओं को उस मनुष्य के शरीर को त्यागने तथा शूकरों के झुण्ड में समा जाने का आदेश दिया। जब प्रदूषासुर के सैंकड़ों दास प्रेतात्माओं ने मानव शरीर को त्याग कर शूकरों का शरीर धारण किया, वे शूकर भाग कर सागर में गोता लगाने लगे तथा उनकी मृत्यु हो गई।

वह मनुष्य प्रदूषासुर के दिए हुए दुःख एवं भय से मुक्ति पा चुका था। उसने नए वस्त्र धारण किये तथा गुरु जी व उनके दूतों के संग समय व्यतीत किया। जबरोण नगर के निवासी भयभीत हो गए तथा श्री गुरु मुक्तिदाता को वहाँ से दूर चले जाने को कहा। गुरु जी ने सम्मति दी तथा वहाँ से शांतिपूर्वक प्रस्थान किया।

जिस व्यक्ति ने प्रदूषासुर से मुक्ति प्राप्त किया, उसने गुरु जी के साथ चलने का आग्रह किया किन्तु गुरु जी ने मना कर दिया। अतः वह व्यक्ति चला गया जिससे कि वह दस नगर क्षेत्र के समस्त लोगों को सूचित कर सके कि श्री गुरु मुक्तिदाता ने उसके लिए क्या किया है। उसे सुन कर प्रत्येक व्यक्ति आश्चर्यचकित था।

अध्याय २९: स्त्री व मंदिर सभापति

सहायता मिली तुम्हे तुम्हारी आस्था से।
जाओ और जीवन यापन करो शान्ति से॥
(स्रोत - श्री भास्वर ५:४८)

जब श्री गुरु मुक्तिदाता पुनः झीलक्षेत्र लौट गए, स्थाननीय मंदिर के सभापति भास्कर ने गुरु जी से बात करनी की इच्छा प्रकट की, अतः उन्होंने उसे अपने समक्ष बुलाया। भास्कर ने गुरु की मुक्तिदाता के चरणों में प्रणाम किया एवं उनसे कहा, "गुरु जी मेरी सुपुत्री मृत्यु शय्या पर है, कृपया मेरे आश्रय चलें व उसके रोग हर लें।"

श्री गुरु मुक्तिदाता ने उनके संग चलने और उनकी पुत्री को स्वास्थ्य प्रदान करने की सहमति दी। एक जनसमूह उनके पीछे चला आ रहा था। रोग से ग्रसित एक स्त्री उस जनसमूह में उपस्थित थी। बारह वर्षों से वह रक्तस्राव से ग्रसित थी परन्तु सभी उसकी सहायता करने में असफल रहे।

ज्यों ही उसने गुरु जी के पीछे आ कर उन्हें स्पर्श किया, उसका रक्तस्राव एकाएक बंद हो गया।

गुरु जी पीछे मुड़े और बोले, "मुझे किसने स्पर्श किया?"

जब सब ने अस्वीकार कर दिया तो श्रवण ने कहा, "गुरु जी, एक पूरा जनसमूह आप को धकेलता आ रहा है, आप को तो बहुतों ने स्पर्श किया है।" परन्तु श्री गुरु मुक्तिदाता ने कहा, "किसी ने मुझे आशा व आस्था से स्पर्श किया क्यों कि मुझ में से शक्ति प्रवाहित हो कर बाहर चली गयी।" तब उस स्त्री ने सब की उपस्थिति में शाष्टांग प्रणाम करते हुए उनके चरण स्पर्श किये, जब उसने श्री गुरु मुक्तिदाता को उन्हें स्पर्श करने का कारण बताया, तब गुरु जी ने उससे कहा, "हे पुत्री! तुम्हारी आस्था ने तुम्हारा रोग हर लिया है। जाओ शांतिपूर्वक जीवन यापन करो।"

गुरु जी ने भास्कर के भवन के लिए पुनः प्रस्थान किया। इससे पहले कि श्री गुरु मुक्तिदाता वहाँ पहुंचे भास्कर की पुत्री की मृत्यु हो चुकी थी। श्रवण, ब्रह्मदयाल, बाहुयोध तथा कन्या के माता-पिता के अतिरिक्त उन्होंने किसी को भी अपने संग जाने की अनुमति नहीं दी। गुरु जी ने उसकी कलाइयों को कोमलता से थाम कर उठाया और कहा, "पुत्री उठो!" वह खड़ी हो गई व उसके माता-पिता आश्चर्य से भर गए परन्तु श्री गुरु मुक्तिदाता ने उनसे कहा कि जो भी हुआ उसकी चर्चा वे किसी न करे।

अध्याय ३०: श्री गुरु मुक्तिदाता के बारह दूतों की यात्रा

जो भी मुझे सार्वजनिक रूप से गुरु स्वीकार कर आत्मसमर्पण करता है।
मैं उसे मेरे स्वर्गीय पिताश्री के समक्ष सम्मानित करता हूँ॥

जो भी मेरे विरुद्ध युद्ध करता है।
मैं उसे मेरे स्वर्गीय पिताश्री के समक्ष असम्मानित करता हूँ॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १०:३२-३३)

श्री गुरु मुक्तिदाता ने अपने बारह दूतों को एकत्र किया। उन्होंने उन्हें अपने ग्राम व जाति में भगवान् के मुक्तिराज्य की घोषणा करने के उद्देश्य से भेजा।

उन्होंने उन्हें पीड़ित एवं बीमार को स्वास्थ्य प्रदान करने की शक्ति एवं अधिकार भी प्रदान किया। उन्होंने उनसे कहा,

अतिरिक्त मुद्राएं तथा आपूर्तियाँ कतई साथ न लेना।
उन परिवारों के साथ आश्रय लेना जो तुम्हारा स्वागत करे।।

जो सेवा ग्रहण करते हैं वे वापस तुम्हारी सेवा करेंगे।
जिन्हें निःशुल्क सेवा मिली है, वे निःशुल्क सेवा करे।।

श्री गुरु मुक्तिदाता के बारह दूतों ने कई ग्रामों की यात्रा की, उन्होंने कई लोगों को स्वास्थ्य प्रदान किया एवं मुक्तिराज्य का उपदेश दिया।

वे मत्स्यपुर गाँव में पुनः गुरु जी से मिले। वहाँ ५,००० से अधिक लोग एकत्र हुए, गुरु जी ने उनका स्वागत किया तथा उन्हें मुक्तिराज्य का उपदेश दिया, उन्होंने कई रोगियों तथा पीड़ितों को स्वास्थ्य भी प्रदान किया। संध्या को दूत अभिजीत ने श्री गुरु मुक्तिदाता को पांच रोटियां तथा दो छोटी मछलियां दी और गुरु जी ने भोजन के उस क्षुद्र मात्रा के लिए भगवान् को धन्यवाद दिया, भोजन की क्षुद्र मात्रा ५,००० लोगों को व उनके बारह दूतों को भोजन कराने के लिए पर्याप्त हो गई।

वहाँ किसी भी प्रकार के पक्षपात की कोई संभावना नहीं थी, अतः प्रत्येक ने पेट भर कर भोजन किया।

अध्याय ३१: महान आस्था

जो दिन-रात भगवान् का आवाहन करे वह उन्हें न्याय प्रदान करेंगे।
मैं कहता हूँ वह देखेगा कि शीघ्र वे न्याय के सम्मुख होंगे ॥
(स्रोत - श्री भास्वर १८:७)

उनके मत्स्यपुर से प्रस्थान करने के पश्चात, गुरु जी एवं उनके बारह दूत वत्सनपुर व जेले नगर पहुंचे। इस क्षेत्र के लोग गुरु जी एवं उनके बारह दूतों के धर्म का पालन नहीं करते थे।

एक स्त्री को यह समाचार मिला कि गुरु जी उनके ग्राम पधारे हैं अतः वह उस आश्रय में पहुंची जो उनका निवास स्थान था तथा उसने गुरु जी से बात करवाने का अनुरोध किया। गुरु जी ने उसे अपने सम्मुख होने की अनुमति दी।

गुरु जी के दूत गण हतप्रभ हुए जब उसने गुरु जी के समक्ष निर्भीकता से उनके चरण स्पर्श करते हुए शाष्टांग प्रणाम किया तथा चीत्कार करते हुए कहा, "प्रभु जी, दवे महाराज के सुपुत्र! मुझ पर दया करें, मेरी पुत्री प्रदूषासुर के दास प्रेतात्मा से पीड़ित है।"

गुरु जी ने उत्तर दिया,

"मैं अपनी प्रजा की सेवा करता हूँ।" स्त्री ने एक गंभीर विनती करते हुए कहा, "मेरी सहायता कीजिये!"

गुरु जी ने कहा,

"यह उचित नहीं कि कोई एक परिवार की स्वच्छ रोटी लेकर बाहर निकाल फेंके।" स्त्री ने गुरु जी को देखते हुए उत्तर दिया,

"जी हाँ, परन्तु कुकुर उस परिवार द्वारा छोड़ी गई रोटी के टुकड़ों को खाते हैं।"

तब श्री गुरु मुक्तिदाता ने उससे कहा, "बहन, तुम में महान आस्था है! तुम्हारी विनती सुन ली गई है।" उसकी पुत्री उसी क्षण स्वस्थ हो गई।

अध्याय ३२: विदेशी सेवा तथा प्रतीकरण

मेरे मन में इन लोगों के लिए दया है।
मैं इन्हें भूखे पेट नहीं जाने दूंगा॥ ॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १५:३९)

श्री गुरु मुक्तिदाता तथा उनके दूत गण ने वतानपुर व जेलेनगर से प्रस्थान किया तथा पुनः दस नगर क्षेत्र पहुंचे। विभिन्न जातियों, संस्कृतियों और धर्मों के लोगों का एक विशाल जनसमूह सहायता की आशा लेकर उनके समक्ष पहुंचा।

श्री गुरु मुक्तिदाता ने कई रोगियों के रोग हर लिए, उन्होंने भगवान् की स्तुति व महिमा की। उनके दूत मंडल सात रोटियां तथा कुछ छोटे मत्स्य एकत्र कर लाये। किसी को भी यह चिंता नहीं थी कि कौन सा भोजन किस जाति के लोगों के दान से आया है।

श्री गुरु मुक्तिदाता ने उस भोजन के लिए भगवान् को धन्यवाद दिया और जब वह धन्यवाद दे चुके, उनके पास सब को भोजन कराने के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध थी। वहाँ उन्होंने ४,००० लोगों के भोजन का प्रबंध किया।

सभी ने आनंद और शांति के साथ भोजन किया। किसी में पक्षपात की कोई संभावना नहीं थी।

अध्याय ३३: मैं कौन हूँ?

मैं अपने सम्प्रदाय को मुक्तिराज्य की चाबी प्रदान करूँगा।
तुम इस संसार के लिए मुक्ति का द्वार खोलोगे॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १६:१९)

जब श्री गुरु मुक्तिदाता उस जनसमूह को विदा कर चुके, वह तथा उनके दूत स्त्रोत पहुंचे। उन्होंने अपने दूत मंडल से प्रश्न किया, "लोगों के अनुसार मैं कौन हूँ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "कुछ लोग कहते हैं आप आदि अरुल संस्कारक हैं, कुछ कहते हैं कि आप किसी ऋषि के अवतार हैं।" गुरु जी ने पुनः प्रश्न किया, "परन्तु तुमलोगों की क्या राय है? तुम्हारे अनुसार मैं कौन हूँ?"

श्रवण ने उत्तर देते हुए कहा, "आप भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार हैं।" श्री गुरु मुक्तिदाता ने कहा, "हाँ भाई श्रवण, मैं वही हूँ, यह तुम पर भगवान् ने प्रकाशित किया है। अब से तुम्हारा परिचय पाषाणभाई के नाम से होगा क्यों कि तुम ही मेरे सम्प्रदाय के आधारशिला को स्थापित करोगे व नरक का द्वार मेरे सम्प्रदाय पर विजय प्राप्त नहीं कर पायेगा।"

श्री गुरु मुक्तिदाता ने अपने दूत मंडल को आदेश दिया कि वे किसी पर भी उनका वास्तविक परिचय प्रकाश न करे।

अध्याय ३४: मृत्यु व पुनर्जीवन

जिन्हें मेरा शिष्य बनने की अभिलाषा है वे स्वयं को अस्वीकार करे।
तथा मेरे अनुसरण हेतु मृत्यु को स्वीकार करे॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १६:२४)

श्री गुरु मुक्तिदाता ने वर्णन करते हुए अपने दूत मंडल से कहा, "शान्तिधाम में मेरा प्रवेश करना तथा कष्ट भोगना अनिवार्य है, महामंदिर समिति, पुजारी तथा धर्म आचार्य मेरी हत्या करेंगे परन्तु तीन दिनों के पश्चात मैं पुनर्जीवित हो जाऊंगा।" यह सुन कर पाषाणभाई तथा दूत मंडल अत्यंत विभ्रांत थे।

तब श्री गुरु मुक्तिदाता ने अपने दूत मंडल से कहा,

मेरे शिष्यों को मेरे अनुसरण की अभिलाषा होनी चाहिए।
भले ही उन्हें मृत्यु के सम्मुख होना पड़े।।

आध्यात्मिक क्षति में प्राकृतिक परिणाम पर अडिग रहना।
सनातन जीवन में आध्यात्मिक परिणामों पर अडिग रहना।।

इस संसार का समस्त धन तथा समाज का सम्मान।
व्यर्थ होगा यदि सनातन जीवन गँवा बैठो।।

मैं अपने भक्तों को मानव जाति की सेवा के लिए पुरस्कृत करूंगा।
मैं अपने भक्तों को मेरे नाम की भक्ति हेतु पुरस्कृत करूंगा।।

अध्याय ३५: स्वर्गीय महिमा

मुक्तिदाता मेरे पुरुषोत्तम अवतार हैं।
उनकी आज्ञा का पालन करो॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १७:५)

श्री गुरु मुक्तिदाता के अपनी मृत्यु व अपने पुनर्जीवन की भविष्यवाणी करने के लगभग एक सप्ताह के पश्चात वह पाषाणभाई, बाहुयोध तथा भाई ब्रह्मदयाल को लेकर पवित्र पर्वत के शिखर पर पहुंचे।

जब गुरु जी पूजा अर्चना कर रहे थे, एकाएक ही उनका शरीर परिवर्तित हो गया। उनका मुख तथा उनके वस्त्र सूर्य की भाँती प्रकाशमान हो गए। श्री आदि देव ऋषि व श्री उद्धार ऋषि नामक दो ऋषि प्रकट हुए तथा श्री गुरु मुक्तिदाता के संग वार्तालाप किया। पाषाणभाई बोले, "श्री गुरु मुक्तिदाता! क्यों कि हम यहाँ उपस्थित हैं, आइये, हम यहाँ तीन मंडपों का निर्माण करें, एक आपके लिए, एक श्री आदि देव के लिए तथा एक श्री उद्धार के लिए।"

तब, मेघ ने उन्हें ढक दिया तथा भगवान् की आकाशवाणी हुई। पाषाणभाई, बाहुयोध तथा ब्रह्मदयाल ने भयभीत होकर शाष्टांग प्रणाम किया। जब उन्होंने उठकर देखा, गुरु जी उनके समक्ष सदैव की भाँती साधारण रूप में उपस्थित थे। वह बोले, "दूत मंडल के किसी भी सदस्य से इस स्वर्गीय अनुभव की चर्चा न करना जब तक कि मेरी मृत्यु व मेरे पुनर्जीवन की भविष्यवाणी पूर्ण न हो जाए।"

अध्याय ३६: शक्तिशाली प्रदूषित आत्मा

इस प्रकार की प्रदूषित आत्माएं केवल तपस्या से ही बाहर आ सकती हैं।
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १७:२०-२१)

जब श्री गुरु मुक्तिदाता तथा उनके अन्य तीन दूत पवित्र पर्वत से दूत मंडल में सम्मिलित होने के उद्देश्य से लौटे, उन्होंने स्वयं को एक विशाल जनसमूह से घिरा पाया, उस जनसमूह में किसी विषय पर वाद-विवाद हो रहा था।

ज्यों ही उन्होंने श्री गुरु मुक्तिदाता को देखा, वे उन्हें प्रणाम करने के उद्देश्य से उनकी ओर दौड़े और कहा, "प्रणाम गुरु जी"।

श्री गुरु मुक्तिदाता ने उन्हें नमस्कार किया और कहा, "इस विवाद का क्या कारण है?" जनसमूह में से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया, "गुरु जी, मैं अपने उस पुत्र को यहाँ लाया था जो प्रदूषासुर के दास प्रदूषित आत्मा से पीड़ित है। वह मूक हो चुका है और जब भी प्रदूषित आत्मा उस पर आक्रमण करे, उसे भयंकर दौरा पड़ता है। मैंने आपके शिष्यों से उस प्रदूषित आत्मा को बाहर निकालने का अनुरोध किया परन्तु वे असफल रहे।" यह सुनकर गुरु जी ने अपने दूत मंडल से कहा, "मैं सर्वदा यहाँ न रहूंगा, उस बालक को यहाँ ले आओ।" वे बालक को उनके समक्ष ले आए, जब प्रदूषित आत्मा को ज्ञान हुआ कि उसके समक्ष श्री गुरु मुक्तिदाता खड़े हैं, उसने बालक पर आक्रमण किया और देखते ही देखते बालक को दौरा पड़ा और वह नीचे गिर गया।

श्री गुरु मुक्तिदाता ने बालक के पिता से प्रश्न किया, "यह बालक कितने समय से ऐसा है?" बालक के पिता ने उत्तर दिया, "जन्म से ही।" उसने विस्तार से वर्णन करते हुए कहा, "प्रदूषित आत्मा इसकी हत्या करने के उद्देश्य से प्रायः ही इसे जल अथवा अग्नि में गिरा देता है, परन्तु, यदि आप कुछ करने में सक्षम हैं तो हम पर कृपा होगी, हमारी सहायता करें।" श्री गुरु मुक्तिदाता बोले, "यदि मैं सक्षम हूँ? उसके लिए सब कुछ संभव है जिस में आस्था है। "एकाएक, बालक के पिता श्री गुरु मुक्तिदाता के चरणों में गिर पड़े और कहने लगे, "जी हाँ, क्षमा! क्षमा श्री गुरु मुक्तिदाता। मैं आस्था रखता हूँ; कृपया मेरी अनास्था का विनाश करें, मेरी सहायता करें प्रभु।"

गुरु जी प्रदूषासुर के दास प्रदूषित आत्मा को उस बालक के शरीर को त्याग देने का आदेश दिया। गुरु जी बोले, "अरे बधिर और मूक प्रेत आत्मा! मैं तुझे आदेश देता हूँ, निकल जा इस बालक से और पुनः इस बालक में कभी न समाना। "एक भयंकर चीत्कार के साथ प्रदूषित आत्मा बालक के शरीर से बाहर निकला। बालक शांत हो गया अतः लोगों को बोध हुआ कि उसकी मृत्यु हो गयी। परन्तु श्री गुरु मुक्तिदाता ने उसकी भुजा पकड़कर उसे उठाया और वह अपने चरणों पर खड़ा हो गया।

अध्याय ३७: शान्तिधाम की ओर यात्रा

मैं तुम लोगों को भूखे बाघों के बीच कोमल गायों की भांति भेज रहा हूं।
(स्रोत - श्री भास्वर १०:३)

श्री गुरु मुक्तिदाता की शान्तिधाम की ओर यात्रा निकट थी। वह अस्वीकृति, मृत्यु तथा पुनर्जीवन के सम्मुख होने वाले थे। उन्होंने ७२ दूतों को उन ग्रामों में भेजा जो शान्तिधाम के मार्ग में थे। जिससे कि जन गण उनके इस यात्रा हेतु प्रस्तुत रहे।

वह उनसे बोले, "मैं तुम लोगों को भूखे बाघों के बीच कोमल गायों की भांति भेज रहा हूं। अपने संग अतिरिक्त मुद्राएं तथा आपूर्तियाँ कतई न लेना, मिलने वाले लोगों को मार्ग में प्रणाम न करना, प्रत्येक परिवार से केवल उनके आश्रय में आलाप करना।"

"जब भी किसी परिवार में प्रवेश करो, कहो 'ओ३म् शांति।' यदि वह परिवार वास्तव में आत्मशांति की कामना करता है, उस पर तुम्हारा आशीर्वाद रहेगा।"

"वहीं आश्रय लेना, चाहे जो भी दिया जाए, वहीं खान-पान करना। रोगियों के रोग हर लेना तथा पीड़ितों को मुक्ति प्रदान करना। उस परिवार को मेरे मुक्तिराज्य का उपदेश देना। व्यर्थ में घर-घर विचरण न करना।

इस यात्रा की समाप्ति के पश्चात ७२ दूत आनंदित हो कर वापस लौटे एवं गुरु जी को बताया, "श्री गुरु मुक्तिदाता, प्रदूषासुर व उसके दास भी आपके नाम से हमारे समक्ष समर्पण कर देते हैं।"

श्री गुरु मुक्तिदाता ने उत्तर दिया, "मैं प्रदूषासुर को वज्र की भाँती आकाश से पतित होता देख रहा था। यद्यपि, तुम्हारे लिए आनन्द का विषय यह न हो कि प्रदूषित प्रेत आत्मा तुम्हारी आज्ञाओं का पालन करते हैं परन्तु यह कि तुम्हें सनातन जीवन प्रदान किया गया है।"

अध्याय ३८: दर्शना, मनीता व प्राण

मनुष्य कई महत्वपूर्ण वस्तुओं को अर्जित करने की चिंता में जीवन व्यतीत करता है।
परन्तु आत्मशांति एकमात्र वास्तविक आवश्यकता है॥
(स्रोत - श्री भास्वर १०:४१)

श्री गुरु मुक्तिदाता ने शान्तिधाम के लिए प्रस्थान किया। दर्शना तथा मनीता नामक दो बहने अपने भ्राता प्राण के संग निवास करती थीं।

दर्शना गुरु जी के समक्ष बैठ कर आत्मशांति का ज्ञान अर्जित कर रही थी, परन्तु मनीता दूत मंडल के लिए चाय एवं नाश्ते का प्रबंध करने में व्यस्त थी। मनीता ने गुरु जी से अनुरोध किया कि वह दर्शना को उसकी सहायता हेतु भेज दे।

गुरु जी बोले,

मनुष्य कई महत्वपूर्ण वस्तुओं को अर्जित करने की चिंता में जीवन व्यतीत करता है।
परन्तु आत्मशांति एकमात्र वास्तविक आवश्यकता है।।

गुरु जी ने अपनी यात्रा को जारी रखते हुए अंजीरा से प्रस्थान किया।

दर्शना तथा मनीता ने श्री गुरु मुक्तिदाता को समाचार भेजा कि प्राण एक रोग से पीड़ित थे। जब तक अंजीरा में गुरु जी का पुनरागमन हुआ, प्राण की मृत्यु हुए चार दिन बीत चुके थे। जब श्री गुरु मुक्तिदाता ने उनके परिवार तथा ग्राम में मृत्यु शोक देखा, उनके नेत्र डबडबा गए।

परिवार की परंपरा के अनुसार प्राण के मृत शरीर को पत्थर की एक समाधि में रखा गया था। गुरु जी ने समाधि के समीप खड़े हो कर चीत्कार किया, "बाहर आ जाओ!" और शीघ्र ही प्राण समाधि से बाहर आ गया, वह सजीव हो चुका था। समस्त ग्राम आश्चर्यचकित था।

श्री गुरु मुक्तिदाता ने आधार नामक एक आचार्य को भी स्वास्थ्य प्रदान किया जो कुष्ठ रोग से ग्रसित था। वह अंजीरा का निवासी था अतः उसने गुरु जी के सम्मान में एक भोज का आयोजन किया। उसने वह भोज अपने आश्रय में आयोजित किया था। उस भोज की व्यवस्था का समस्त कार्यभार मनीता पर था, उसके लिए यह गुरु जी की सेवा थी। भोज के मध्य ही, दर्शना ने मूल्यवान तथा सुगन्धित तेल लाकर गुरु जी के सिर एवं चरणों पर लगाकर अभिषेक किया तथा अपने बालों से उनके चरणों को पोंछा। उसने यह कृत्य गुरु जी की मृत्यु से पूर्व एक अभिषेक के रूप में किया।

अध्याय ३९: निर्मल

क्यों कि श्री गुरु मुक्तिदाता संसार को दण्डित करने के उद्देश्य से अवतरित नहीं हुए।
परन्तु वह संसार को पूर्ण मुक्ति प्रदान करने के उद्देश्य से अवतरित हुए॥
(स्रोत - श्री भास्वर ३:१७)

श्री गुरु मुक्तिदाता तथा उनके शिष्य मंडल शान्तिधाम की यात्रा करते रहे। सुगन्धपुर में निर्मल नामक एक धनि ठग गुरु जी का दर्शनाभिलाषी था, परन्तु विशाल जनसमूह के कारण गुरु जी का दर्शन पाना उसके लिए असंभव हो गया।

निर्मल गुरु जी के दर्शन हेतु एक वृक्ष पर चढ़ गया। जब गुरु जी जनसमूह के मध्य से चले आ रहे थे, उन्होंने वृक्ष के ऊपर बैठे निर्मल को देखा और कहा,

"नीचे आओ निर्मल, चलो, तुम्हारे आश्रय में चाय-नाश्ता करें।"

निर्मल श्री गुरु मुक्तिदाता तथा उनके शिष्य मंडल को अपने भवन में ले गया एवं उन्हें सेवा सत्कार से संतुष्ट किया। जब वह उनके संग समय व्यतीत कर रहे थे, निर्मल ने कहा, "श्री गुरु मुक्तिदाता, मैं अपनी आधी संपत्ति निर्धनों को दान कर दूंगा तथा उन लोगों को चार गुना धन वापस करूंगा जिन को मैंने आज तक ठगा।"

मुक्तिदाता बोले, "आज इस परिवार में मुक्ति का प्रवेश हुआ है, क्यों कि इसी क्षण तुम भी भगवान् की संतान हो गए हो, मैं खोये हुए मनुष्यों की खोज में आया हूँ और उन्हें मुक्ति देने आया हूँ।" गुरु जी ने निर्मल के भवन से प्रस्थान किया तथा पुनः शान्तिधाम की यात्रा पर चल पड़े।

अध्याय ४०: शान्तिधाम में प्रवेश

धन्य है वह महाराजा जिसका आगमन भगवान् के नाम से होता है।
स्वर्गीय शान्ति व महिमा हो॥
(स्रोत - श्री भास्वर १९:१०)

श्री गुरु मुक्तिदाता व उनके शिष्य मंडल अंजीरा के निकट, कच्च ग्राम में पधारे। गुरु जी के किसी अपरिचित भक्त ने शान्तिधाम की यात्रा हेतु उन्हें एक गधा भेंट में दिया। शान्तिधाम में गुरु जी का आगमन हुआ, अंजीरा के लोग उनके आगे आगे चल रहे थे तथा सबको यह कहते हुए सावधान कर रहे थे की भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार का आगमन हो चुका है। वे जय जयकार करते हुए कह रहे थे,

"श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त।
हमें स्वर्गीय मुक्ति प्रदान कीजिये"।।

नगर के भिन्न-भिन्न भागों से उपस्थित हुए लोगों ने प्रश्न किया, "यह कौन हैं?" अंजीरा के जन गण ने उत्तर दिया, "यह झीलक्षेत्र, विभक्त ग्राम के निवासी आचार्य मुक्तिदाता अभिषिक्त हैं।" जब गुरु जी शान्तिधाम पहुँच चुके, उनके नेत्र भर आये और वह व्यथायुक्त स्वर में बोले,

तुम्हें पूर्ण मुक्ति का बोध नहीं।
मैं तुम्हें पूर्ण मुक्ति प्रदान करूंगा, इसका तुम्हें बोध नहीं।।

पहले ही विलम्ब हो चुका था, अतः वह अपने शिष्य मंडल को लेकर पुनः अंजीरा लौट गए।

अध्याय ४१: महामंदिर

मेरा गुरुकुल अखिल विश्व के लिए प्रार्थना का मंदिर कहलायेगा।
(स्रोत - ऋषि मुक्तेश्वर ५६:७)

अगले दिन वे पुनः शान्तिधाम गए तथा उन्होंने महामंदिर में प्रवेश किया। श्री गुरु मुक्तिदाता ने देखा की समस्त मंदिर लोभियों से भरा और अधर्म में डूबा हुआ था।

गुरु जी ने एक डंडा उठाया और उन समस्त व्यापारियों को खदेड़ दिया जो मंदिर के उत्सव की आड़ में धन बटोर रहे थे। उन्होंने उन मेजों को उलट दिया जिन पर वे व्यापारी मुद्राओं की अदला-बदली कर रहे थे, तथा उन्हें वहाँ से दूर भगा दिया।

तत्पश्चात उन्होंने डंडे को शांतिपूर्वक नीचे रखा तथा वहाँ खड़े जन गण से कहा,

यह मेरा भवन है।
यह पूजा व प्रार्थना का स्थान है।।

इसे अपना डेरा न बनाओ।
ठगी का स्थान न बनाओ।।

कई रोगी व पीड़ित उनके समक्ष मंदिर में आये और उन्होंने उन सब के रोग हर लिए। लोगों को उनकी महिमा का अनुभव हुआ एवं उन्होंने मंदिर में उनकी स्तुति की। पुरोहित व पुजारी श्री गुरु मुक्तिदाता से भयभीत थे क्यों की पूरा नगर उन्हें सम्मानित कर उनकी सुन रहा था रहा था, अतः वे गुरु जी की हत्या करने का अवसर खोजने लगे।

अध्याय ४२: विश्वासघात

तब, समस्त आध्यात्मिक प्रदूषण का राजा, प्रदूषासुर करीयत नगर के निवासी श्री वंदन के भीतर प्रवेश कर गया।
बारह दूतों में एक अपने गुरु से विश्वासघात कर गया॥
(स्रोत - श्री भास्वर २२:३)

तत्पश्चात श्री गुरु मुक्तिदाता शान्तिधाम पधारे तथा उन्होंने महामंदिर में मुक्तिराज्य की कई आध्यात्मिक अनुरूपता का वर्णन किया।

पुरोहित व पुजारी उनके कथनों को ध्यान पूर्वक सुन रहे थे, वे उन पर अपने धर्म के विषय में असत्य बोलने का आरोप लगाना चाहते थे जिससे कि वे उनकी हत्या कर सके।

तब गुरु जी के दूतों में से एक, करियत नगर का निवासी वंदन मुख्य पंडित के समक्ष गया तथा उसने प्रश्न किया, "यदि मैं उसे आप को सौंप दूँ तो मेरे इस विश्वासघात के बदले आप मुझे क्या देंगे?" अतः उन्होंने उसे चांदी की तीस मुद्राएं दीं।

उत्सव के प्रथम दिन श्री गुरु मुक्तिदाता अपने बारह दूतों से बोले, नगर के लिए प्रस्थान करो तथा वहाँ मेरे एक ऐसे भक्त से मिलो जो गोपनीय ढंग से मेरी भक्ति करता है, और उसे कहना, "श्री गुरु मुक्तिदाता अपने दूतों के संग आपके भवन में उत्सव मनाएंगे।"

संध्या होते ही श्री गुरु मुक्तिदाता बोले, मैं सत्य कहता हूँ, तुम में से एक मुझ से विश्वासघात करेगा और मेरी हत्या कर देगा।"

दूत मंडल शोक में डूब गए तथा एक एक करके उनसे प्रश्न करना प्रारम्भ कर दिया, "निश्चित रूप से आप मेरे विषय में नहीं कह रहे हैं, है न गुरु जी?"

श्री गुरु मुक्तिदाता ने उत्तर दिया, "जो भी मुझे से विश्वासघात कर के मेरी हत्या करेगा वह मुझ से रोटी ग्रहण करेगा।" श्री गुरु मुक्तिदाता ने रोटी ली तथा करियत नगर के निवासी वंदन को दिया। गुरु जी बोले, "जो भी करने वाले हो, शीघ्र करो।"

ज्यों ही वंदन ने रोटी ग्रहण की, स्वयं प्रदूषासुर उसमें प्रवेश कर गया तथा वह बाहर चला गया, यह रात्रि का समय था।

अध्याय ४३: स्मरण

श्री गुरु मुक्तिदाता ने विश्वासघात की रात्रि को एक रोटी तोड़ी।
यह मेरे शरीर का प्रतीक है जिसे तुम्हारे लिए तोड़ा गया, इसे ग्रहण करने का अभिप्राय है मेरा स्मरण॥

इसी प्रकार उन्होंने एक प्याला लिया और कहा।
यह तुम्हारे लिए मेरे रक्तपात का प्रतीक है, इस प्याले से पान करना मेरा स्मरण है॥

इस खान-पान के द्वारा मेरा ये स्मरण।
घोषित करता है कि श्री गुरु मुक्तिदाता समस्त धर्मों में परिवर्तन लाते हैं॥
(स्रोत - शिखर, प्रथम पत्र ११:२३-२६)

दूत मंडल के शेष दूत भोज की प्रस्तुति में थे। श्री गुरु मुक्तिदाता ने रोटी तथा एक प्याला लिया व कहा,

लो और ग्रहण करो; यह मेरा शरीर है।
मैं इसे तुम सब के लिए एक बलिदान स्वरुप अर्पण करता हूँ।।

सभी इस प्याले से पान करो।
समस्त मानव जाति की क्षमा हेतु मैं स्वयं का रक्तपात करूँगा।।

और जब वे भजन गायन समाप्त कर चुके, वे जतून पर्वत की ओर चल पड़े। श्री गुरु मुक्तिदाता अपने दूतों से बोले, "मेरे पुनर्जीवन के पश्चात, मैं झीलक्षेत्र में तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा क्यों कि तुम सब मुझे अकेला छोड़ दोगे।

मुक्तिवेद में लिखा है,

मैं गड़ेरिये पर प्रहार करूंगा।
तथा झुण्ड तितर-बितर हो जाएगा।।

श्री गुरु मुक्तिदाता जैतूनापुर नामक एक वाटिका में तपस्या कर रहे थे। उनकी तपस्या से ऐसी शक्तिपात हुई कि उनके माथे से रक्त की बूंदों का पतन होना प्रारम्भ हो गया। उसी समय, श्री गुरु मुक्तिदाता को बंदी बनाने के उद्देश्य से वंदन करियतपुरी वहाँ सैनिकों को संग लिए पहुंचा, वंदन ने उन्हें एक चुम्बन दिया क्यों कि उसने सैनिकों को कहा था कि गुरु जी वही होंगे जिसे मैं चुम्बन दूंगा। गुरु जी ने उत्तर दिया, "भाई, तुम वही करो जो करने आए हो।"

सैनिकों ने श्री गुरु मुक्तिदाता को बंदी बना लिया तथा वहाँ से दूर ले गए।

अध्याय ४४: परीक्षण

सत्य प्रकाश करने के उद्देश्य से मैंने इस सृष्टि में जन्म लिया।
"सत्य क्या है?" विक्रम जी ने प्रश्न किया।।
(स्रोत - श्री ब्रहादयाल १८:३७-३८)

गुरु जी से विश्वासघात किये जाने तथा उन्हें बंदी बनाये जाने के पश्चात, उनके शत्रु उन्हें पण्डितों के मुखिया के समक्ष ले गए। उसने उनके शिष्य एवं सम्प्रदाय के विषय में प्रश्न किये।

श्री गुरु मुक्तिदाता बोले, "मैंने संसार से यह स्पष्ट शब्दों में कह दिया है, मैंने सर्वदा ही छोटे मंदिरों में तथा महामंदिर में मुक्तिराज्य का उपदेश दिया है। मैंने गोपनीय ढंग से कुछ नहीं कहा। उनसे जान लें जिन्होंने मुझे सुना है। उन्हें निश्चित रूप से बोध है कि मैंने क्या कहा है।

पण्डितों के मुखिया ने पुनः प्रश्न किया, "क्या तुम ही भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार हो?" गुरु जी ने अपने उत्तर में कहा, "मैं ही हूँ, और तुम मुझे भगवान् के दाहिनी ओर आसन लिए तथा स्वर्ग से अवरोहित होते हुए देखोगे।"

सवेरा होते ही, पण्डितों के मुखिया, आचार्य गण तथा पंचायत ने योजना बनाई तथा श्री गुरु मुक्तिदाता को विदेशी मुख्य मंत्री विक्रम जी के समक्ष ले गए। विक्रम जी ने श्री गुरु मुक्तिदाता से प्रश्न किया, "मुखिया पंडित जी कहते हैं कि तुम्हारे सम्प्रदाय ने तुम्हे यहाँ का राजा घोषित कर दिया है, क्या यह सत्य है?"

श्री गुरु मुक्तिदाता बोले, "मेरा राज्य इस संसार में नहीं है, यदि होता तो मेरे सेवक मेरे लिए युद्ध करते। वे कोई युद्ध नहीं कर रहे हैं और न ही मैं लड़ रहा हूँ क्यों कि मेरा राज पाट किसी और ही स्थान में है।" मंत्री ने कहा "तो तुम्हारे शत्रु सत्य कहते हैं, तुम महाराजा ही हो! "तत्पश्चात, विक्रम जी ने पुनः प्रश्न किया, "क्या तुम इन शक्तिशाली लोगों को उत्तर नहीं दोगे जो तुम पर आरोप लगाते हैं?"

परन्तु श्री गुरु मुक्तिदाता ने कोई उत्तर न दिया, अतः विक्रम जी हतप्रभ हुए।

तत्पश्चात वह गुरु जी के शत्रुओं के समीप गया और कहा "इस व्यक्ति ने कोई अपराध नहीं किया, मैं इसका क्या करूँ जिसे तुम महाराजा कहते हो?"

उन्होंने एक चीत्कार के साथ उत्तर दिया "मृत्यु!" विक्रम जी ने प्रश्न किया, "क्यों? इसका अपराध क्या है?" परन्तु उन्होंने और भी ओजपूर्ण ढंग से चीत्कार किया "मृत्यु!"

विक्रम जी ने निर्णय लिया कि श्री गुरु मुक्तिदाता का विस्पंदन कर के उन्हें मृत्यु दंड दिया जाए।

अध्याय ४५: मृत्यु

"मैं अपनी आत्मा आपको सौंपता हूँ।"
(स्रोत - श्री भास्वर २३:४६)

विदेशी सैनिक श्री गुरु मुक्तिदाता को मृत्यु स्थल ले आये, प्रातः ९ बजे का समय था जब विदेशी शासन के व्यवस्थानुसार उनकी हत्या कर दी गयी। उन्होंने श्री गुरु मुक्तिदाता को लकड़ी से बने एक शूल पर लटका दिया। विदेशी सैनिकों ने लोहे की कीलों को उनके भुजाओं व चरणों में जड़ने हेतु हथौड़े का प्रयोग किया जिससे कि वह शूल उनके शरीर को पकड़कर रख सके।

तत्पश्चात, उन्होंने उस शूल के निचले भाग को धरती पर बने एक छिद्र में डाल कर उस शूल को एक वृक्ष की भाँती स्थापित कर दिया। विदेशी सैनिकों ने उनके सिर पर काँटों से बना एक मुकुट भी डाला क्यों कि उन्होंने स्वयं को महाराजा कहा था।

मुखिया पंडित, आचार्य गण तथा पंचायत ने उनका उपहास किया व कहा, "इसने दूसरों को मुक्ति प्रदान किया, परन्तु स्वयं को मुक्त करने में असफल रहा! इसने कहा था कि यह भगवान् का पुरुषोत्तम अवतार है। अब भगवान् इसे बचा ले तो हम इसके सम्प्रदाय में सम्मिलित हो जाएंगे।"

एकाएक ही दोपहर के समय समस्त संसार अन्धकार में डूब गया और दोपहर तीन बजे तक पूरा विश्व अंधकारमय था। तीन बजे, श्री गुरु मुक्तिदाता ने एक विराट चीत्कार के साथ कहा, "हे भगवान्, आपने मुझे अकेला क्यों छोड़ दिया?" उसके उपरान्त उन्होंने चीत्कार किया, "हे तात, मैं अपनी आत्मा आपके हाथों में सौंपता हूँ।"

उसी समय एक तीव्र भूकंप का आगमन हुआ जिससे महामंदिर काँप उठा तथा कई धार्मिक मनुष्य जो समाधि ले चुके थे पुनः सजीव हो उठे।

जब एक विदेशी सैनिक ने देखा कि श्री गुरु मुक्तिदाता ने किस प्रकार समाधी ली, उसने कहा, "निःसंदेह, यह भगवान् का पुरुषोत्तम अवतार था।"

अध्याय ४६: श्री राजू तथा श्री प्रजीत

अरिमती ग्राम के निवासी श्री राजू तथा श्री प्रजीत लगभग ३४ किलो शुष्क मसाला ले आये।
और उसे श्वेत कपड़े में भर कर उससे गुरु जी के शरीर को लपेट कर उन्हें समाधि दी।।
(स्रोत - श्री ब्रह्मदयाल १९:३९-४१)

अरिमती ग्राम के श्री राजू पंचायत का एक प्रत्यक्ष सदस्य थे। गुरु जी के प्रति उनकी भक्ति गोपनीय थी क्यों कि उन्हें अपनी पदवी खोने का भय था। श्री राजू ने विक्रम जी से मांग की कि गुरु जी का मृत शरीर उन्हें सौंपा जाए।

इसमें श्री प्रजीत ने भी उनका साथ दिया, यह वही आचार्य थे जिन्होंने महामंदिर परिसर के समीप श्री गुरु मुक्तिदाता से वार्तालाप किया था।

विक्रम जी यह जान कर विस्मित हुए कि मुक्तिदाता की मृत्यु हो चुकी है। उन्होंने विदेशी सेना अधिकारी से इस सूचना की पुष्टि की। जब उन्हें ज्ञान हुआ कि यह यथार्थ है, उन्होंने गुरु जी का शव अरिमती ग्राम के श्री राजू को दे दिया। श्री राजू व श्री प्रजीत ने गुरु जी का मृत शरीर एक श्वेत कपड़े में लपेट दिया तथा उनके सम्प्रदाय के अनुसार उन्होंने गुरु जी के मृत शरीर का शवाधान एक नए समाधि में कर दिया।

उन्होंने समाधि के प्रवेशद्वार पर एक बड़े आकार का शिला रख दिया और वहाँ से चले गए।

अध्याय ४७: पुनर्जीवन

यदि मृत्यु के पश्चात पुनर्जीवन नहीं है, तो श्री गुरु मुक्तिदाता अब भी मृत हैं।
यदि श्री गुरु मुक्तिदाता पुनर्जीवित नहीं हुए, हमारी आस्था व्यर्थ है॥

परन्तु श्री गुरु मुक्तिदाता निश्चित रूप से पुनर्जीवित हुए हैं।
वह उनमें प्रथम हैं जो भविष्य में पुनर्जीवित होने वाले हैं॥
(स्रोत - शिखर, प्रथम पत्र १५:१३-२०)

सप्ताह के प्रथम दिन, सूर्योदय होते ही कई स्त्रियां समाधि स्थल पर पहुंचीं। उस समय एक और तीव्र भूकंप हुआ क्यों कि स्वर्ग से एक देवदूत प्रकट हुआ और गुरु जी की समाधि के प्रवेशद्वार पर पड़ी शिला को हटाकर उसने उस पर आसन ले लिया।

उसकी उपस्थिति अग्नि की भाँती थी, उसके वस्त्र शुद्ध श्वेत थे। देवदूत ने स्त्रियों से कहा,

"भयभीत न हों क्यों कि मुझे ज्ञान है कि आप श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त की खोज में हैं। वह मृत थे, परन्तु उन्हें भगवान् से पुनर्जीवन प्राप्त हुआ है। स्मरण करें की उन्होंने आपसे क्या कहा था",

मैं पापियों के समूह द्वारा हत्या किया जाऊंगा।
तीन दिनों के पश्चात मैं पुनर्जीवन प्राप्त करूंगा।।

तत्पश्चात उन्हें गुरु जी का यह कथन स्मरण हुआ।

देवदूत ने कहा, "अब यथाशीघ्र प्रस्थान करें तथा उनके बारह दूतों को यह समाचार सुनाएं कि गुरु जी पुनर्जीवित हो चुके हैं। वह उससे पूर्व ही झीलक्षेत्र पहुँच रहे हैं, आप उन्हें वहीं देखेंगी।

स्त्रियों में इस दृश्य का वर्णन दूत मंडल तथा शिष्य गण के समक्ष किया परन्तु उन्होंने स्त्रियों के कथनों पर विश्वास नहीं किया, क्यों कि उनका कथन मतिमंद लोगों का कथन प्रतीत हो रहा था। तथापि, उन्होंने झीलक्षेत्र के लिए प्रस्थान किया।

अध्याय ४८: झीलक्षेत्र दर्शन

श्री गुरु मुक्तिदाता ने अपने दूत से कहा कि उनका शान्तिधाम जाना अनिवार्य है।
वहाँ उन्होंने पंडों तथा पुजारियों द्वारा बहुत कष्ट भोगा है॥

वे गुरु जी की हत्या करेंगे।
परन्तु तीन दिनों के पश्चात, वह पुनर्जीवित होंगे ॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त १६:२९)

एक दिन झीलक्षेत्र में, श्री गुरु मुक्तिदाता एकाएक अपने शिष्य मंडल के समक्ष प्रकट हुए। उन्होंने अपने हाथ जोड़े और कहा "ओ३म् शांति।"

वे विस्मित तथा भयभीत थे क्यों कि उन्हें प्रतीत हुआ की वे किसी आत्मा को देख रहे हैं। श्री गुरु मुक्तिदाता ने उनसे कहा, "तुम क्यों भयभीत हो? मेरे हस्त, मेरे चरणों को देखो। मुझे स्पर्श कर के देखो; आत्मा का कोई शारीरिक अंग नहीं होता, किन्तु मेरे अंग हैं।"

जब वह यह कह चुके, उन्होंने उन्हें अपने हस्त तथा चरण दिखाए। वे अब भी हतप्रभ थे, अतः उन्होंने उनसे प्रश्न किया, "क्या तुम्हारे यहाँ कोई भोजन सामग्री उपलब्ध है? "उन्होंने उनके लिए भोजन का प्रबंध किया तथा उन्होंने उनके उपस्थिति में भोजन किया। श्री गुरु मुक्तिदाता उनसे बोले, "मैंने तुमसे यही कहा था जब मैं तुम्हारे साथ था, मैंने कहा था कि मैं मृत्यु रुपी कष्ट भोगूँगा तथा तीन दिनों के पश्चात मैं पुनर्जीवन प्राप्त करूंगा। जिस शरीर के साथ मैं पुनर्जीवित हुआ यह वही शरीर है जिस के साथ मेरा जन्म हुआ था।"

अध्याय ४९: स्वर्गारोहण

मैं अखिल विश्व के समस्त स्वर्गीय अधिकार का स्वामी हूँ।
मेरी गुरु दीक्षा उन समस्त लोगों को दो जो मेरा शिष्य बने॥

जल संस्कार मेरी दीक्षा है।
गुरु दीक्षा पिता, पुत्र तथा परमात्मा के नाम से देना, यही मेरा गुरु मंत्र है॥

मेरे शिष्यों को मेरी समस्त शिक्षाओं का पालन करने की शिक्षा दो।
युग के अंत तक मैं तुम्हारे संग रहूंगा॥
(स्रोत - श्री ब्रह्मदत्त २८:१८-२०)

श्री गुरु मुक्तिदाता अपने शिष्य मंडल को अंजीरा के निकट एक स्थान पर ले गए, उन्होंने सबको नमस्कार किया तथा सबकी आँखों के सामने उनका स्वर्गारोहण हो गया।

तत्पश्चात, उनके शिष्यों ने एक विशेष पूजा की तथा परम आनंदोत्सव मनाते हुए पुनः शान्तिधाम आ पहुंचे। वे महामंदिर में ठहरे एवं श्री गुरु मुक्तिदाता की भक्ति में भजन गायन किया।

श्री गुरु मुक्तिदाता ने उनके शिष्यों के उपस्थिति में और भी कई अलौकिक कर्म किये थे जो इस पुस्तक में अभिलिखित नहीं है। परन्तु, जो भी अभिलिखित है वह इस उद्देश्य से है कि आप को यह ज्ञान हो कि श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त भगवान् के पुरुषोत्तम अवतार हैं, तथा उनके प्रति आपकी आस्था जागे और वह स्वयं के नाम से आपको परम मुक्ति व सनातन जीवन प्रदान करे।

तथास्तु!

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

शब्दावली

हमने निम्नलिखित यूनानी, इब्रानी व अरामी नामों के अभिप्रायों का अनुसंधान किया तथा उनके लिए हमने उन संस्कृत व हिंदी शब्दों का प्रयोग किया है जिनका अर्थ पारम्परिक रूप से अनुवादित शब्दों के लगभग समान है। पहले नामों के भारतीय अनुवाद लिखित हैं और उसके पश्चात पारम्परिक नाम तथा उनकी व्याख्या व अभिप्राय रेखांकित किये गए हैं।

अ

अभिजीत - आंद्रेयास - आंद्रेयास का अर्थ है साहस।

अंजीरा - बेथनियाह - अंजीर। बेथनियाह ग्राम का अर्थ है अंजीर भवन।

अश्विन - फिलिप्पुस - वे दैविक व्यक्तित्व जो अश्व से सम्बंधित हैं, अश्व से प्रेम करने वाला।

अक्षय - हल्फियस - सर्वदा नूतन रहने वाला।

आ

आदि अरुल संस्कारक - यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला - भगवान् की कृपा व संस्कार करने वाला। "आदि" शब्द हिन्दू गुरु श्री आदि शंकर के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

आधार- शिमोन, आधार, पतरस का अर्थ है शिला या पाषाण। वह श्री गुरु मुक्तिदाता के सम्प्रदाय के आधारशिला थे।

उ

उद्धार ऋषि - मूसा - जिसे बचाया गया हो। मूसा का अर्थ है बाहर निकाला गया अथवा बचाया गया।

ऋ

ऋषि आदिदेव - एलिय्याह - परा ब्रह्म अथवा परमेश्वर, एलिय्याह ने प्रकट किया था की भगवान् परम ईश्वर हैं।

ऋषि मुक्तेश्वरा - यशायाह - उद्धारेश्वर, इसका अर्थ है भगवान् से प्राप्त उद्धार।

शब्दावली

ऋ

ऋषि सुजन - यिर्मयाह - यिर्मयाह का अर्थ है भगवान् के द्वारा गौरवान्वित किया गया।

ऋषि तारक - होशे - उद्धार करने वाला।

ऋषिक्षेत्र - कैसरिया फिलिप्पी- स्त्रोत, कैसरिया फिलिपि यरदन के स्त्रोत पर स्थित था।

ज

जैतूनापुर - गेतसेमनी - वह स्थान जहाँ जैतून से तेल निकाला जाता है।

जेले - त्सीदोन - मछुआरा (बांग्ला)। यह स्थान समुद्र तट पर स्थित था।

जितेश - गब्रिएल - विजेता, गब्रिएल का अर्थ है भगवान् का उत्तम समर्थक।

त

तीर्थ- सूखार- पवित्र स्थान अथवा पवित्र जल। सुखार वही स्थान है उतपत्ति की पुस्तक के अनुसार जहाँ याकूब ने भूमि तथा एक कुआं दान किया था।

द

दुर्जनवीर - हेरोदेस - हेरोदेस एक दुर्जन योद्धा था जिसने गुरु जी का जन्म होते ही उनकी हत्या करने की चेष्टा की थी।

दवे - दाऊद - प्रियतम, राजा दाऊद।

देवदान - नथानिएल - नथानिएल का अर्थ है भगवान् का दान।

दर्शना - मरयम - भगवान् का दर्शन, सर्वप्रथम मरयम ने ही गुरु जी के दर्शन किये क्यों की उन्होंने ही गुरु जी को जन्म दिया।

दस नगर - दिकापुलिस - वह क्षेत्र जो दस नगरों का समूह था।

शब्दावली

न

निर्जन - मरुभूमि। यहाँ इस शब्द का प्रयोग किसी स्थान, व्यक्ति अथवा किसी भूमिका के लिए किया गया है।

निर्मल- जक्कई- शुद्ध

प

पावनगर - बैतलहम - इसका अर्थ है रोटी भवन।

प्राण - लाजर - जीवन, श्री गुरु मुक्तिदाता ने लाजर को नूतन जीवन प्रदान किया था।

प्रजीत - नीकुदेमुस - जन गण की विजय, नीकुदेमुस का अर्थ है विजेता गण।

प्रतरूप- थोमा- जुड़वाँ, थोमा एक जुड़वाँ थे।

प्रदूषासुर - शैतान - प्रदूषित शत्रु। शैतान शब्द का मूल इब्लीस या लूसिफ़र है जिसका अर्थ है प्रकाश वाहक। शैतान हमारा शत्रु है जो वास्तविक प्रकाश को प्रदूषित करता है।

ब

ब्रह्मदत्त - मत्ति - मत्ति का अर्थ है भगवान् का उपहार।

ब्रह्मदयाल - योहन - कृपा, योहन गुरु जी के दूतों में से एक थे।

बाहुयोध - याकूब - याकूब ने भगवान् से मलयुद्ध किया।

भ

भगवान्- ईश्वर/परमेश्वर- सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता, संहारकर्ता।

भगवान् का मयूर - परमात्मा जो गुरु जी की दीक्षा के समय अवरोहित हुए अथवा पवित्र आत्मा। यहाँ मयूर का अर्थ आत्मा है क्यों की वह गुरु जी अभिषिक्त पर उनकी दीक्षा के समय प्रकाशमान हुए।

शब्दावली

भ

भास्कर - याईर - प्रकाश की सृष्टि करने वाला, प्रकाश का विस्तार करने वाला।

भास्वर- लुका – भास्वर अथवा लुका का अर्थ प्रकाश है।

म

मुक्तिराज्य - स्वर्ग का साम्राज्य, मुक्ति का साम्राज्य।मोक्ष ही स्वर्ग अथवा भगवान् का साम्राज्य है।

मैनाक - सामरिया - कैलाश के समीप पर्वत का एक शिखर। सामरिया का अर्थ है पर्यवेक्षण शिखर।

मत्स्यपुर - बैतसैदा - मछली, बैतसैदा का अर्थ है मछली घर।

मनीता - मरथा - सम्मानित, भवन की स्वामिनी।

र

राजूभाई - यूसुफ़ - समृद्धि, यूसुफ़ गुरु जी के सांसारिक पिता थे।

व

विक्रम - पिलातुस - शक्तिशाली, पिलातुस एक शक्तिशाली रूमी अधिकारी था।

वतानपुर - त्सोर - चट्टान, यह एक प्रपाती क्षेत्र था जो समुद्र पर स्थित था।

वितीर्ण - इब्री - जीवन रुपी नदी पार करना। इब्री का अर्थ है जिन्होंने यूफ्रेट्स नदी या महानद पार किया।

वंदन- यहूदा/थद्देयास- इनका अर्थ है वंदना अथवा उपासना करना।

शब्दावली

व

विभक्त - नासरत - नासरत का अर्थ विभाजित है।

वसंतनगर - काना - काना का अर्थ है वसंत।

श

शिखर - कुरिन्थुस - कुरिन्थुस का अर्थ शिखर है।

शान्तिधाम - यरूशलेम - शान्ति का स्थान।

स

सुगन्धपुर- यरीहो- सुगन्धित स्थान।

सांत्वना- कफरनहूम- ढाढ़स का आश्रय।

समाधिपुर- गिरसेनियों- समाधियों का नगर।

सुहानीपुरम - नाइन - नाइन का अर्थ है सुखद।

श्र

श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त - येशु मसीह या ईसा मसीह - वह गुरु जो उद्धार के अभिषिक्त प्रभु हैं। येशु मसीह या ईसा मसीह का अर्थ है वह प्रभु जिन्हें समस्त ब्रम्हांड के उद्धार हेतु अभिषेक किया गया।

श्री यौद्धेश - मार्कुस- मार्कुस का अर्थ है युद्ध का ईश्वर।

श्री वंदन करियतवासी - यहूदा करियतवासी - ऊपर वंदन का अर्थ देखें।

श्रवण - शिमोन - शिमोन का अर्थ है श्रोता, गुरु जी ने उन्हें एक और नाम दिया अतः वह आधार कहलाये।

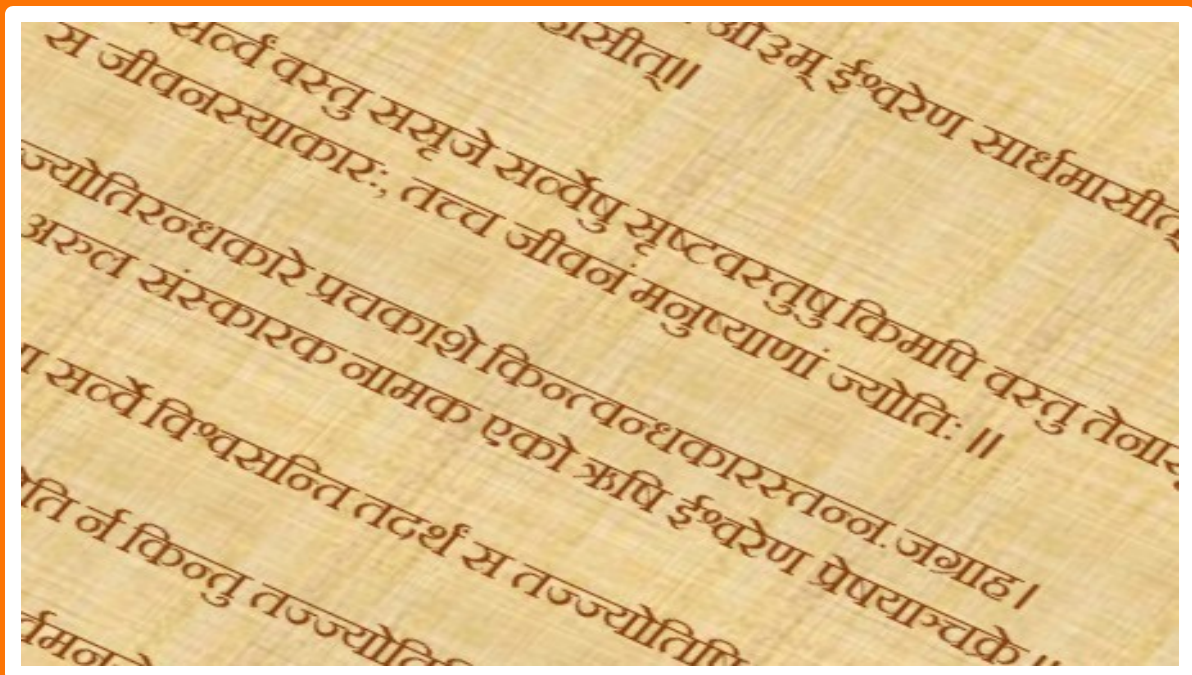

श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त कथा विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों में निवास करने वाले जन गण को लाभान्वित करने का एक सद्भावपूर्ण प्रयास है। यह पुस्तक, श्री गुरु मुक्तिदाता अभिषिक्त की महान गाथा होने के अतिरिक्त, उनकी वास्तविक जीवनी का प्रस्तुतीकरण है। इसमें गुरु जी के चार शिष्यों के साक्ष्यों में सम्मिलित प्रसंगों का वर्णन है, परन्तु उनको केवल एक कथा के रूप में अभिलिखित किया गया है जो श्री गुरु मुक्तिदाता के जीवन की घटनाओं के कालानुक्रमिक क्रम की रचना करने का हमारे उत्तम प्रयत्न को दर्शाता है। आशा है इस पुस्तक के द्वारा पाठक गण श्री गुरु मुक्तिदाता की जीवनी व कथनों की व्याख्या में प्रच्छन्न अध्यात्म व ज्ञान के सागर से लाभान्वित होंगे।

Front cover painting Illustration copyright
© 2019 by Janet Atkins. All rights reserved.

Text copyright © 2018 by Timothy
Shultz. All rights reserved.

मुक्ति मार्ग मठ